कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

"Registered" Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2023-25 RNI No.-CHHHIN/2002/10910, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 रायपुर, प्रकाशन - सोमवार 29 सितम्बर 2025 वर्ष-24 अंक - 4 मूल्य रु. 12/- कुल पृष्ठ - 12 www.krishakjagat.org पृष्ठ-1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

नवरात्रि एवं दशहरा पर्व की हार्दिक

कृषक जगत के सुधी पाठकों, विज्ञापनदाताओं, प्रतिनिधियों एवं शुभचिंतकों को नवरात्रि एवं दशहरा पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।

– कृषक जगत परिवार

ट्रैक्टर खरीदी में किसानों को मिली बड़ी राहत : श्री साय

जीएसटी बचत उत्सव में शामिल हुए मुख्यमंत्री

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जीएसटी बचत उत्सव के बीच औचक निरीक्षण पर देवपुरी स्थित ट्रैक्टर शोरूम पहुंचे। श्री साय ने यहां किसानों से आत्मीय संवाद कर जीएसटी कटौती पर उनकी प्रतिक्रिया और खरीदी में हुई बचत की जानकारी ली। मुख्यमंत्री श्री साय ने शोरूम में ट्रैक्टर और हार्वेस्टर खरीदने आए किसानों को चाबी सौंपकर शुभकामनाएं दीं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने अभनपुर के बिरोदा निवासी श्री रवि कुमार साहू को उनके नए हार्वेस्टर की चाबी सौंपी। इस अवसर पर खुशी व्यक्त करते हुए श्री रवि साहू ने कहा, 'मैने सपने में भी नहीं सोच था कि मैं नया हार्वेस्टर खरीदूंगा। मैं सेकेंड हैंड हार्वेस्टर खरीदने के बारे में सोच रहा था। जीएसटी उत्सव में नए हार्वेस्टर खरीद पर मुझे पूरे 2 लाख रुपए की बचत हुई है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने अभनपुर कोलर से आए वरिष्ठ किसान श्री ज्ञानिक राम साहू को उनके नए ट्रैक्टर की चाबी सौंपी। मुख्यमंत्री से संवाद करते हुए श्री साहू ने बताया कि जीएसटी में कटौती के बाद नए ट्रैक्टर की खरीदी पर उन्हें पूरे 60 हजार रुपए की बचत हुई है। उन्होंने कहा कि इस बचत से उनका परिवार त्योहार को और अच्छे से मना सकेगा।

ट्रैक्टर शो रूम के प्रोप्राइटर श्री अशोक अग्रवाल ने मुख्यमंत्री से संवाद में बताया कि जीएसटी में कटौती के कारण बिक्री में इज़ाफ़ा हो रहा है और ग्राहकों का उत्साह बढ़ा है। उन्होंने कहा, 'पहले जो ट्रैक्टर 10.25 लाख रुपए का आता था, वह अब 9.75 लाख रुपए में उपलब्ध है, जिससे किसानों को 50 हजार रुपए की बचत हो रही है। इसी तरह 7.62 लाख का ट्रैक्टर अब 7.21 लाख और 6.51 लाख का ट्रैक्टर अब 6.11 लाख रुपए में मिल रहा है।

कीमतों में कटौती और फेस्टिवल डिस्काउंट से किसानों की बड़ी बचत हो रही है। जीएसटी दर घटने के बाद हार्वेस्टर भी सस्ते हो गए हैं।'

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में लागू जीएसटी 2.0 ने आम जनता, किसानों और उपभोक्ताओं को वास्तविक राहत दी है। ट्रैक्टर, हार्वेस्टर और अन्य कृषि यंत्रों की कीमतों में आई कमी से किसानों को सीधा लाभ हो रहा है, जिससे उनकी खेती-किसानी और जीवनयापन और सुगम होगा।

जैविक उत्पादों को विश्वसनीय बनाने, उद्योग को करना होगा ठोस प्रयास : BASAI 2025

नई दिल्ली (कृषक जगत)। 'बायोलॉजिकल्स फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर-ए क्लाइमेट रेजिलिएंट अप्रोच' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन BASAI 2025 में नई दिल्ली में कृषि मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी और उद्योग जगत के प्रतिनिधि एकत्र हुए। सम्मेलन का आयोजन बायोलॉजिकल एग्री सॉल्यूशंस एसोसिएशन ऑफ इंडिया (BASAI) ने किया।

सम्मेलन ऐसे समय में हुआ जब कृषि मंत्रालय ने बायोस्टिमुलेंट्स की गुणवत्ता और नकली उत्पादों को लेकर चिंता जताई है। वहीं दूसरी ओर, भारत का जैविक उत्पाद क्षेत्र तेज़ी से बढ़ रहा है। एसोसिएशन के अनुसार, बायोस्टिमुलेंट्स का बाजार 2022 के 410.78 मिलियन डॉलर से बढ़कर 2032 तक 1,135.96 मिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। बायोफर्टिलाइजर्स का बाजार 2033 तक 399.67 मिलियन डॉलर तक पहुंचने की संभावना है, जबकि बायोपेस्टिसाइड्स में भी लगातार दहाई अंक की वृद्धि दर्ज की है।

नियामक ढांचा और भरोसा

उद्घाटन सत्र में कृषि आयुक्त श्री पी.के. सिंह ने कहा कि भारत ने जैविक उत्पादों के लिए मजबूत नियामक ढांचा तैयार करने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। उन्होंने कहा, ये नियम किसानों तक उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद पहुंचाने, उत्पादकता और लाभप्रदता बढ़ाने और लंबे समय तक भरोसा कायम करने में मदद करेंगे। BASAI की अध्यक्ष सुश्री संदीपा कानिटकर ने कहा कि जैविक उत्पाद उत्पादकता की खाई को भरने, मिट्टी की सेहत और खाद्य सुरक्षा करने में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

निर्यात मानक और जैविक उत्पाद

डॉ. जे.पी. सिंह, अतिरिक्त पादप संरक्षण सलाहकार ने कहा कि जैविक उत्पादों के उपयोग को निर्यात मानकों से जोड़ना बेहद जरूरी है। उन्होंने APEDA के साथ सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि MRLs के उल्लंघन के कारण होने वाली अस्वीकृतियों को कम किया जा सके। जुज़र खोराकीवाला, CMD बायोस्टैट ने कहा कि किसानों के साथ सीधा जुड़ाव ही असली प्रभाव पैदा करता है। BASAI CEO श्री विपिन सैनी ने भी किसानों से जुड़ाव और पारदर्शिता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, भारत के किसान हमारे खाद्य तंत्र की रीढ़ हैं।

खेती की अधिक जानकारी के लिए देखें
www.krishakjagat.org

क्रॉपलाइफ इंडिया ने रखा 1 ट्रिलियन डॉलर कृषि अर्थव्यवस्था का रोडमैप

नेशनल कॉफ्रेंस 2025 में सरकार, उद्योग और वैज्ञानिकों ने मिलकर तय की भविष्य की दिशा

नई दिल्ली (कृषक जगत)। क्रॉपलाइफ इंडिया ने अपनी 45वीं वार्षिक आम बैठक (AGM) के साथ नेशनल कॉन्फ्रेंस 2025 का आयोजन किया। इसमें **केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान**, नीति-निर्माता और उद्योग जगत के प्रतिनिधि शामिल हुए। सम्मेलन का उद्देश्य था - विकसित भारत 2047 के लक्ष्य में कृषि और फसल संरक्षण की भूमिका पर चर्चा।

उद्घाटन संबोधन में कृषि मंत्री ने कहा कि किसान देश की आत्मा हैं और उनकी सेवा करना ईश्वर की सेवा है। उन्होंने कहा कि भारत खाद्यान्न की कमी से निकलकर अब आत्मनिर्भर और निर्यातक बन चुका है।

उन्होंने चेताया कि 2050 तक देश की जनसंख्या 170 करोड़ तक पहुँच सकती है, ऐसे में खाद्य और पोषण सुरक्षा सबसे बड़ी चुनौती होगी।

नवाचार और जिम्मेदारी का संतुलन

डॉ. त्रिलोचन महापात्रा, अध्यक्ष, पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण (PPV&FRA) ने कहा कि हरित क्रांति ने भारत को खाद्य सुरक्षा और आत्मविश्वास दोनों दिए हैं। देश 65 मिलियन टन अनाज उत्पादन से 350 मिलियन टन तक पहुँचा है और बागवानी ने इसे भी पीछे छोड़ दिया है।

2 लाख करोड़ का नुकसान रोकें

क्रॉपलाइफ इंडिया के अध्यक्ष श्री अंकुर अग्रवाल ने कहा कि भारत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा कृषि उत्पादक और दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक है, जिसकी वार्षिक निर्यात क्षमता लगभग रु. 40,000 करोड़ है।

उन्होंने बताया कि भारत हर साल कीट और बीमारियों से लगभग रु. 2 लाख करोड़ की फसलें गंवाता है। दिलचस्प तथ्य यह है कि भारतीय किसान औसतन 400 ग्राम/ हेक्टेयर कीटनाशक इस्तेमाल करते हैं, जबकि वैश्विक औसत 8,000 ग्राम है। यह साबित करता है कि भारतीय किसान दक्ष हैं और अति-उपयोग नहीं करते।

श्री अग्रवाल ने कहा कि क्रॉपलाइफ इंडिया के सदस्य देश के 70 प्रतिशत से अधिक कारोबार का प्रतिनिधित्व करते हैं और वैश्विक फसल संरक्षण के 95 प्रतिशत रसायनों और अणुओं में योगदान करते हैं। उन्होंने वादा किया कि उद्योग जिम्मेदार नवाचार, प्राकृतिक खेती के समर्थन और कीकृत कीट प्रबंधन को आगे बढ़ाएगा।

साझेदारी से बनेगा मजबूत भविष्य

सम्मेलन में समग्र चर्चा हुई कि नियमों और राज्य स्तर पर पालन की जटिलताओं को आसान बनाना जरूरी है। साथ ही, सतत कृषि के लिए कीटनाशकों की भूमिका पर भी विचार किया गया।

बीज उद्योग में ईज ऑफ डूइंग बिजनेस सुधार से सालाना रु. 800 करोड़ की वृद्धि संभव

नई दिल्ली (कृषक जगत)। फेडरेशन ऑफ सीड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया (FSII) ने कहा है कि अगर बीज उद्योग में नियम आसान किए जाएं और 'ईज़ ऑफ़ डूइंग बिज़नेस' पर ज़ोर दिया जाए, तो हर साल रु. 800 करोड़ से अधिक का अतिरिक्त आर्थिक मूल्य पैदा किया जा सकता है। इससे किसानों तक बेहतर बीज समय पर पहुंचेंगे और भारत की वैश्विक बीज व्यापार में हिस्सेदारी 1 प्रतिशत से बढ़कर 2035 तक 10 प्रतिशत तक पहुँच सकती है।

यह रिपोर्ट, 'भारतीय बीज उद्योग में व्यापार करने में आसानी', FSII की 9वीं वार्षिक आम बैठक में जारी की गई। रिपोर्ट के अनुसार, नियमों में सुधार से बीज कंपनियां हर साल 3-5 नई किस्में बाजार में ला सकती हैं और R&D निवेश बढ़ा सकती हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, जटिल नियमों और देरी के कारण बीज उद्योग को हर साल करीब रु. 300 करोड़ का नुकसान होता है। लाइसेंसिंग और रजिस्ट्रेशन की बाधाएं खासकर MSMEs को प्रभावित करती हैं।

रिपोर्ट के खास बिंदु

- सरल नियमों से रु. 800 करोड़ की अतिरिक्त वृद्धि संभव
- वैश्विक बीज व्यापार : 2035 तक 10 रु. हिस्सेदारी का लक्ष्य
- नई किस्में आएँगी बाज़ार में
- नियमों से हर साल 300 करोड़ का घाटा
- R&D में 15 प्रतिशत तक बढ़ोतरी संभव
- किसानों की मांग - जीएम फसलें

पीपीवीएफआरए के चेयरपर्सन डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने कहा कि मजबूत बौद्धिक संपदा (IP) ढांचा और समय पर मंजूरी किसानों तक तकनीक पहुंचाने की कुंजी है। वहीं, कृषि मंत्रालय में संयुक्त सचिव (बीज) अजीत के. साहू ने बताया कि सरकार नियमों को सरल बनाने और अलग-अलग कानूनों को मिलाकर नया ड्राफ्ट सीड बिल लाने पर काम कर रही है।

ICAR के सहायक महानिदेशक (बीज) डॉ. डी. के. यादव ने पब्लिक-प्राइवेट सहयोग की अहमियत बताई। FSII अध्यक्ष अजय राणा ने कहा कि नियमों की बाधाओं से बीज कंपनियों को हर साल 800 करोड़ रुपये का नुकसान होता है। उन्होंने कहा कि 'अगर लाइसेंसिंग को एकीकृत कर दिया जाए और प्रक्रियाएं डिजिटाइज हों, तो उद्योग को रु. 382-708 करोड़ की बचत होगी, R&D में 15 प्रतिशत तक वृद्धि होगी और भारत वैश्विक बीज बाजार में बड़ा हिस्सा हासिल कर सकेगा।'

समस्याओं को हल करने में राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों की अहम भूमिका : श्री साय

मुख्यमंत्री से प्रशिक्षु अधिकारियों ने की मुलाकात

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय से मुख्यमंत्री निवास में राज्य प्रशासनिक सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों ने सौजन्य मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल में 2024 बैच के 13 एवं 2021 बैच के एक अधिकारी शामिल थे।

मुख्यमंत्री श्री साय ने प्रशिक्षु अधिकारियों से चर्चा के दौरान कहा कि राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारी प्रशासन की धुरी हैं। जनता की समस्याओं को हल करने में उनकी अहम भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि प्रशासन के साथ-साथ आपको प्रबुद्ध नागरिक के रूप में समाज की भी चिंता करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि एक बेहतर समाज के निर्माण में आप सभी अपना योगदान दें। मुख्यमंत्री श्री साय ने सभी अधिकारियों को पदेन दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करने के लिए शुभकामनाएँ दीं।

छत्तीसगढ़ प्रशासन अकादमी के संचालक श्री टी.सी. महावर ने मुख्यमंत्री श्री साय को अवगत कराया कि इन अधिकारियों का 7 अप्रैल 2025 से प्रारंभ हुआ इंडक्शन कोर्स अब समाप्त हो रहा है। इसके बाद ये सभी अधिकारी राज्य के विभिन्न जिलों में डिप्टी कलेक्टर के रूप में सेवा देंगे, जहाँ वे शासन के विभिन्न विभागों की कार्यप्रणाली को समझेंगे।

चालू खरीफ में अच्छी फसल उत्पादन के आसार

- अभी तक 1045 मि.मी. से अधिक औसत वर्षा दर्ज
- राज्य में 48.65 लाख हेक्टेयर में खरीफ फसलों की बोनी
- लक्ष्य का 99 प्रतिशत खाद वितरित
- किसानों को 6749 करोड़ रुपए का मिला ब्याज मुक्त ऋण

रायपुर। छत्तीसगढ़ में इस खरीफ सीजन में औसत वर्षा काफी अच्छी हुई है। इससे राज्य में अच्छी फसल के आसार बढ़ गए हैं। प्रदेश में 48.65 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में धान, मक्का, कोदो-कुटकी सहित विभिन्न फसलों की बोनी हो चुकी है। खेतों में निदाई-गुड़ाई सहित खाद और दवाई छिड़काव का कार्य तेजी के साथ जारी है। इस खरीफ सीजन में राज्य सरकार ने 48.85 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बोनी का लक्ष्य रखा है। वहीं इस वर्ष 7 हजार 800 करोड़ रूपए ऋण वितरण का लक्ष्य रखा गया है। इस सीजन में किसानों को 6749 करोड़ रुपए का ब्याज मुक्त ऋण वितरित किया गया है।

प्रदेश के किसानों को अब तक 14.45 लाख मीट्रिक टन यानी लक्ष्य का 99 प्रतिशत खाद वितरित किए जा चुके हैं। वहीं किसानों को 4.72 लाख क्विंटल प्रमाणित बीज का वितरण किया गया है। 22 सितम्बर 2025 की स्थिति में प्रदेश में 1045 मिमी से अधिक औसत वर्षा दर्ज की गई है, जबकि प्रदेश की औसत वार्षिक वर्षा 1238.7 मिमी है।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने किसानों को खेती-किसानी में सहूलियतें प्रदान करने के लिए सभी आवश्यक सहयोग करने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किए हैं। उन्होंने किसानों को उनकी मांग के अनुसार सुगमता के साथ खाद का वितरण करने को भी कहा हैं। कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री श्री रामविचार नेताम के मार्गदर्शन में कृषि विभाग के अधिकारियों द्वारा इन पर निरंतर निगरानी रखी जा रही है।

इसी प्रकार प्रदेश में इस खरीफ सीजन में 14.62 लाख मीट्रिक टन उर्वरक वितरण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उक्त लक्ष्य के विरूद्ध 16.04 लाख मीट्रिक टन उर्वरकों का सहकारी एवं निजी क्षेत्रों में भंडारण किया गया है। उक्त भंडारण के विरूद्ध 14.45 लाख मीट्रिक टन उर्वरकों का वितरण किसानों को किया जा चुका है, जो लक्ष्य का 99 प्रतिशत है। कृषि विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इस वर्ष खरीफ 2025 के लिए प्रदेश में 4.95 लाख क्विंटल प्रमाणित बीज वितरण का लक्ष्य रखा गया है, जिसमें से 4.86 लाख क्विंटल बीज का भंडारण कर अब तक 4.72 लाख क्विंटल बीज का वितरण किसानों को किया गया है, जो मांग का 95 प्रतिशत है।

छत्तीसगढ़ को मिला 'बेस्ट सेरीकल्चर स्टेट' का राष्ट्रीय पुरस्कार

रायपुर। छत्तीसगढ़ को रेशम उत्पादन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए भारत सरकार के केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार 'बेस्ट सेरीकल्चर स्टेट' से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार बोर्ड के 76वें स्थापना दिवस 20 सितंबर 2025 को बेंगलूर में आयोजित कार्यक्रम में सांसद एवं बोर्ड सदस्य श्री के. सुधाकर के हाथों प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उप संचालक रेशम श्री मनीष पवार ने ग्रहण किया।

छत्तीसगढ़ में रेशम की गतिविधियाँ विशेषकर दूरस्थ आदिवासी अंचलों में रोजगार सृजन का सशक्त माध्यम बनी हैं। वर्तमान में लगभग 78 हजार ग्रामीण महिलाएं एवं पुरुषों रेशम विभाग की विभिन्न गतिविधियों से जुड़कर स्व-रोजगार प्राप्त कर रहे हैं और आर्थिक रूप से सशक्त बन रहे हैं। राज्य में टसर कीट पालन को बढ़ावा देने के लिए लगातार पौधारोपण और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। 'मेरा रेशम मेरा अभिमान' कार्यक्रम के अंतर्गत वैज्ञानिकों ने ग्रामीणों को नवीनतम तकनीकों की जानकारी दी और उनके प्रश्नों के सरल समाधान भी प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

इस दौरान रायगढ़ जिले को 'उत्कृष्ट जिला' तथा श्री ललित गुप्ता (ग्राम आमाघाट, तमनार, रायगढ़) को 'उत्कृष्ट कृषक' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री गुप्ता लंबे समय से टसर कृमिपालन से जुड़े हैं और अपने क्षेत्र में प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

भारत सरकार द्वारा छत्तीसगढ़ के कार्यों की सराहना से यह प्रमाणित होता है कि राज्य रेशम उत्पादन न केवल स्व-रोजगार के अवसर बढ़ा रहे हैं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

धान खरीदी से पहले फसल प्रविष्टियों का होगा त्रिस्तरीय सत्यापन

रायपुर। खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 में धान उपार्जन से पूर्व राज्य शासन ने फसल प्रविष्टियों की शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए त्रिस्तरीय सत्यापन प्रक्रिया लागू की है। इसी कड़ी में संयुक्त जिला कार्यालय सभाकक्ष में कलेक्टर बलरामपुर-रामानुजगंज की अध्यक्षता में डिजिटल फसल सत्यापन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ।

प्रशिक्षण में बताया गया कि खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग के निर्देशानुसार एग्रीस्टेक पोर्टल और भुईंया सॉफ्टवेयर में दर्ज प्रविष्टियों का 5 प्रतिशत रैंडम सत्यापन मोबाइल पीवी ऐप के माध्यम से किया जाएगा। यह कार्य तीन चरणों में सम्पन्न होगा। पहले चरण में चयनित खसरों का भौतिक सत्यापन राजस्व एवं कृषि विभाग के फील्ड अधिकारी करेंगे। गलत प्रविष्टियां पाए जाने पर 31 अक्टूबर 2025 तक सुधारना अनिवार्य होगा।

कलेक्टर श्री कटारा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि धान खरीदी के लिए इस बार गिरदावरी का कार्य पूरी तरह ऑनलाइन किया जाएगा। जहां ऑनलाइन सर्वे संभव नहीं है, वहां ऑफलाइन सर्वे कर जानकारी को भुईंया ऐप में अद्यतन किया जाए। उन्होंने कहा कि त्रुटियों का सुधार केवल भौतिक सत्यापन के आधार पर ही किया जाएगा और सभी अधिकारी 15 अक्टूबर तक निर्धारित प्रविष्टियों का सत्यापन कार्य पूर्ण करें।

कार्यक्रम में जिला खाद्य अधिकारी, पटवारी, ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, ग्राम पंचायत सचिव सहित बड़ी संख्या में अधिकारी-कर्मचारी मौजूद थे।

महुआ और मिलेट्स को मिली राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पहचान

वर्ल्ड फूड इंडिया 2025 में जशप्योर की प्रभावी उपस्थिति

रायपुर। भारत मंडपम, नई दिल्ली में 25 से 28 सितम्बर तक आयोजित वर्ल्ड फूड इंडिया 2025 में छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले का ब्रांड जशप्योर ने अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराई। आदिवासी महिलाओं की मेहनत और नवाचार से तैयार किए गए महुआ और मिलेट्स आधारित उत्पादों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर छत्तीसगढ़ की एक नई पहचान बनाई।

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की दूरदर्शी सोच और पहल ने महुआ को शराब से हटाकर पोषण और खाद्य सामग्री से जोड़ दिया है। मुख्यमंत्री श्री साय का कहना है कि महुआ और मिलेट्स जैसे पारंपरिक उत्पादों को आधुनिक विज्ञान और नवाचार के साथ जोड़कर हम ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने के साथ-साथ पोषण और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी छत्तीसगढ़ का योगदान बढ़ा रहे हैं।

वर्ल्ड फूड इंडिया 2025 में जशप्योर द्वारा प्रदर्शित महुआ नेक्टर को इसके उच्च पोषण मूल्य और दूध, मिठाइयों व पेय पदार्थों में प्राकृतिक स्वीटनर के रूप में उपयोग के लिए विशेष सराहना मिली। महुआ आधारित च्यवनप्राश (बिना शक्कर, गुड़ और शहद), महुआ टी, कूकीज और एनर्जी स्नेक्स ने भी आगंतुकों का ध्यान आकर्षित किया। जशपुर के पारंपरिक मिलेट (कुटकी), कोदो और बकव्हीट से तैयार उत्पाद पन्द्रह से अधिक वैरायटी के मिलेट पास्ता, पौष्टिक स्नैक्स और बेकरी प्रोडक्ट्स ने दर्शकों को आकर्षित किया है। इन उत्पादों ने साबित किया कि ये अनाज भविष्य के सुपरफूड हैं।

कृषि यांत्रिकीकरण के तहत 9 अक्टूबर से आवेदन होगा शुरू

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य बीज एवं कृषि विकास निगम लिमिटेड द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 में चैम्प्स प्रणाली अंतर्गत क्रियान्वित कृषि यांत्रिकीकरण सबमिशन के तहत अनुदान पर कृषकों को ट्रैक्टर प्रदाय करने हेतु ऑनलाईन आवेदन 9 अक्टूबर से प्रारंभ किया जा रहा है। योजना के तहत कृषकों को अनुदान पर ट्रैक्टर प्रदाय किया जाएगा। इच्छुक कृषक चैम्प्स के पोर्टल http://champs.cgstate.gov.in / के माध्यम से 9 अक्टूबर से कार्यालयीन समय 10 बजे से आवेदन कर सकते हैं।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्द्रिया द्वारा एल.आई.जी.-5, सेक्टर -2 शंकर नगर, रायपुर 492001 (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं कृषक जगत, 14 इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : अतुल सक्सेना, रायपुर : प्रेम प्रकाश सुल्लेरे, फोन : 0771-2420449, मो. : 9826255862, इस अंक का मूल्य रु. 12/-, वार्षिक शुल्क रु. 600/- RNI No.-CHHHIN/2002/10910, E-mail-info@krishakjagat.org

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

*जो मनुष्य अपने वचन पर दृढ़ रहता है,
उसके बारे में मुझे कोई संदेह नहीं रहता। - महात्मा गांधी*

मिलावट रूपी रावण का करें संहार

2 अक्टूबर को नवरात्रि के समापन पर दशहरा का पर्व पूरे देश में श्रद्धा, भक्ति और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। यह त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत अर्थात् बुराई के प्रतीक रावण पर मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम की विजय की स्मृति में मनाया जाता है। दशहरा के बाद बीस दिन बाद भारत सहित विश्व के अनेक देशों में दीपावली का त्यौहार धूमधाम से मनाया जाएगा। पांच दिनों तक चलने वाले पावन पर्व दीपावली के दौरान सबसे ज्यादा मिठाईयों की मांग रहती है। व्यापारी और मिठाई बनाने वाले इस त्यौहर का साल भर प्रतीक्षा करते हैं। दीपावली के दौरान मिठाईयों की अत्यधिक मांग होने का फायदा मिलावटखोर उठाते हैं और बड़ी मात्रा में मिठाई बनाने के लिए उपयोग में लाए जाने वाले दुग्ध उत्पाद खोवा में मिलावट करने से नहीं चूकते। इन्हीं दिनों बड़ी मात्रा में नकली और मिलावटयुक्त खोवा भी जब्त किया जाता है और यह सिलसिला कई दशकों से बदस्तूर जारी है।

मिलावटखोर नागरिकों के स्वास्थ्य की परवाह किए बिना ही खोवा और अन्य दुग्ध उत्पादों में मिलावट करते हैं। दूध और दुग्ध उत्पादों में मिलावट से उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव तो पड़ता ही है, आर्थिक रूप से भी हानि होती है। हर साल खाद्य विभाग दीपावली के एक-दो सप्ताह पहले मिलावटखोरों के खिलाफ अभियान चलाती हैं और मिलावट व नकली दुग्ध उत्पादों को जब्त भी करती हैं। हर साल नकली और मिलावट वाला खोवा जब्त किया जाता है, जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा जाता है और कागजी कार्रवाई कर प्रशासन भी औपचारिकता पूरी कर लेता है। यदि मिलावटखोरों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होती तो सम्भवतः मिलावट और नकली खाद्य सामग्री बनाने वाले हतोत्साहित होते।

भारत में खाद्य पदार्थों में मिलावट के खिलाफ़ मुख्य कानून भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम 2006 है, जो मानव उपभोग के लिए सुरक्षित भोजन उपलब्ध कराने के लिए नियमों का पालन करवाता है। इसके तहत, मिलावट के मामलों में भारतीय दंड संहिता की धारा 272 और 273 भी लागू हो सकती है, जिसमें छह महीने तक की कैद या जुर्माना या दोनों की सज़ा है, जबकि गंभीर मामलों में, जैसे स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुँचाना, सज़ा आजीवन कारावास तक हो सकती है। मिलावट जैसे संगीन अपराध की रोकथाम केवल कानून से नहीं हो सकती। यदि ये कानून इतने कारगर होते तो भारत में मिलावट पर रोक लग गई होती। लेकिन ऐसा नहीं हुआ और मिलावट में कोई कमी हुई बल्कि इसमें हर साल वृद्धि हो रही है। मिलावट पर पूरी तरह रोक लगाना तो सम्भव नहीं है लेकिन कुछ हद तक सफलता मिल सकती है। खोवा मिठाई के साथ अन्य दुग्ध उत्पादों में मिलावट को रोकने का सबसे प्रभावी तरीका यही है कि कच्चा माल उपलब्ध कराने वाले अर्थात् दुग्ध उत्पादक किसानों और डेयरी संचालकों को आगे आना होगा। किसान और उनका संगठन.. किसान उत्पादक संघ (एफपीओ) मिलावट के खिलाफ एकजुट होकर इस बुराई को काफी हद तक ठीक कर सकते हैं ।

किसान, किसानों का समूह - एफ.पी.ओ. और डेयरी संचालक अपने - अपने स्तर पर ही शुद्ध खोवा और दुग्ध उत्पाद बनाने के लिए स्वेच्छा से आगे आ सकते हैं। बड़े कस्बे, तहसील और जिला मुख्यालय पर उपभोक्ताओं को शुद्ध दुग्ध उत्पादों की आपूर्ति के लिए किसान / किसान उत्पादक संगठन पहल कर सकते हैं। सोशल मीडिया ग्रामीण और दूर दराज के क्षेत्रों में भी आसानी से उपलब्ध है। प्रचार - प्रसार के लिए इस सशक्त माध्यम का उपयोग कर उपभोक्ताओं तक मिलावट रहित खाद्य पदार्थों की जानकारी आसानी से पहुंचाई जा सकती है। प्रत्येक शहर में किसान उत्पादक संघ, किसानों के छोटे - छोटे समूह, स्वयं सहायता समूह शुद्ध उत्पाद उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी लें तो यह स्थायी रोजगार का भी साधन बन सकता है। इससे उपभोक्ताओं को शुद्ध खाद्य सामग्री तो मिलेगी ही, मिलावट करने वालों के खिलाफ एक कारगर उपाय सिद्ध हो सकता है।

अकेलापन और अवसाद

नई सदी की सबसे बड़ी चुनौती

● कुमार सिद्धार्थ

आपने कभी सोचा है कि अकेलापन सिर्फ एक भावनात्मक अनुभव नहीं, बल्कि हमारे स्वास्थ्य के लिए उतना ही हानिकारक हो सकता है जितना धूम्रपान या मोटापा? बुजुर्गों में यह हृदय रोग का कारण बन सकता है, और मजबूत सामाजिक संबंध मस्तिष्क के स्वास्थ्य को बेहतर बनाते हैं। एक शोध समीक्षा बताती है कि 18 से 29 वर्ष की उम्र में अकेलापन अपने चरम पर होता है। हर तीन में से एक युवा इस अनुभव से गुजरता है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। वास्तव में, 2024 के एक अध्ययन में पाया गया कि अकेलेपन से आत्महत्या के जोखिम को 16 गुना तक बढ़ा सकता है ।

यही नहीं, हार्वर्ड की एक रिपोर्ट बताती है कि 18-25 वर्ष के हर तीन में से एक युवा अकेला महसूस करता है, और उनमें से आधे से ज़्यादा ने यह माना कि उनके जीवन में उद्देश्य या अर्थ की कमी है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार, हर साल वैश्विक स्तर पर 8 लाख लोग आत्महत्या करते हैं, जबकि आत्महत्या का प्रयास करने वालों की संख्या इससे लगभग 20 गुना अधिक होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन भी मानता है कि अकेलेपन और सामाजिक अलगाव की भावना आत्महत्या के प्रमुख जोखिम कारकों में से एक हो सकती है।

अब ज़रा वृद्धावस्था की ओर देखिए। शोध बताते हैं कि अकेलेपन से डिमेंशिया का खतरा 31 प्रतिशत तक बढ़ जाता है। 'नेचर मेंटल हेल्थ' में प्रकाशित एक रिपोर्ट कहती है कि जो लोग अकेलेपन से जूझते हैं, उनमें भूलने की बीमारी (डिमेंशिया) होने की संभावना अधिक होती है। फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर मार्टिना लुचेती बताती हैं कि सामाजिक संपर्क की कमी और कम दोस्त होने से मेमोरी लॉस यानी याददाश्त खोने की समस्या बढ़ सकती है।

अब सवाल उठता है कि क्या यह सिर्फ मानसिक स्वास्थ्य तक सीमित है? नहीं। 2018 के एक अध्ययन ने दिखाया कि अकेलापन स्ट्रोक का खतरा 32 फीसदी और कोरोनरी हार्ट डिजीज का खतरा 29 फीसदी तक बढ़ा सकता है। जब लोग अकेला महसूस करते हैं, तो तनाव बढ़ जाता है, जिससे हाई बीपी और सूजन जैसी समस्याएँ जन्म लेती हैं।

अकेलापन अब सिर्फ़ भावनात्मक अनुभव नहीं रहा, बल्कि यह धूम्रपान और मोटापे जितना घातक स्वास्थ्य संकट बन चुका है। यह युवाओं में आत्महत्या के जोखिम को कई गुना बढ़ाता है और बुजुर्गों में हृदय रोग व डिमेंशिया का बड़ा कारण बनता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे गंभीर वैश्विक स्वास्थ्य समस्या मानते हुए सामाजिक जुड़ाव को प्राथमिकता देने पर ज़ोर दिया है।

शोध बताते हैं कि यदि अकेलेपन को कम किया जाए, तो अवसाद के मामलों में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है। इसके लिए हमें सामुदायिक और व्यक्तिगत स्तर पर सक्रिय प्रयास करने होंगे। जब कोई व्यक्ति सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेता है या सामाजिक समूहों से जुड़ता है, तो वह खुद को अधिक जुड़ा हुआ महसूस करता है। मनोवैज्ञानिक परामर्श और थेरेपी भी उन लोगों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है, जो लंबे समय से अकेलेपन का सामना कर रहे हैं। इसके अलावा, डिजिटल प्लेटफार्मों का सही उपयोग करके परिवार और दोस्तों से जुड़े रहना, भावनात्मक मजबूती प्रदान कर सकता है। ऐसे में, सामाजिक अलगाव और अकेलापन स्वास्थ्य और सामाजिक नीति अनुसंधान के महत्वपूर्ण विषय बन गए हैं।

दुनिया के कुछ देशों ने नई सदी के इस संकट को पहचाना है। अमेरिकी सरकार ने अकेलापन, सामाजिक अलगाव और सामाजिक संपर्क बढ़ाने के समाधान के लिए एक राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू किया है। अमेरिकी सरकार की तरफ से पिछले साल मई में जारी एक रिपोर्ट कहती है कि महामारी से पहले भी देश के वयस्कों की लगभग आधी आबादी औसत स्तर के अकेलेपन से जूझ रही थी। डेनमार्क सरकार ने भी अकेलेपन को कम करने के लिए एक राष्ट्रीय पहल शुरू की है। इसमें सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देने और सामाजिक एकांत के प्रभावों को कम करने पर जोर दिया गया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अकेलेपन को एक गंभीर जन स्वास्थ्य समस्या के रूप में स्वीकार किया है, जो दुनिया की एक चौथाई आबादी को प्रभावित कर रही है। यह केवल एक सामाजिक मुद्दा नहीं, बल्कि एक ऐसी स्वास्थ्य चुनौती है, जो दीर्घकाल में कई शारीरिक और मानसिक बीमारियों को जन्म दे सकती है। इससे निपटने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सामाजिक जुड़ाव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक वैश्विक आयोग की घोषणा की। इस आयोग में कुल 11 सदस्य शामिल हैं, जिन्हें तीन महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं वैश्विक स्तर पर सामाजिक जुड़ाव को प्राथमिकता देने के लिए एक स्पष्ट एजेंडा तैयार करना, अकेलेपन और सामाजिक अलगाव के दुष्प्रभावों को लेकर जागरूकता फैलाना, साक्ष्य-आधारित समाधानों के लिए विभिन्न देशों, संगठनों और नीति-निर्माताओं के साथ सहयोग करना।

विश्व स्वास्थ्य संगठन का यह कदम अकेलेपन को एक गंभीर स्वास्थ्य संकट के रूप में पहचानने और इसे कम करने के लिए ठोस प्रयासों को सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। यह आयोग दुनिया भर में सामाजिक संबंधों को मजबूत करने और मानसिक स्वास्थ्य पर इसके सकारात्मक प्रभावों को बढ़ावा देने का काम करेगा।

भारत में अकेलेपन और अवसाद से निपटने के लिए वर्तमान में कोई विशिष्ट राष्ट्रीय नीति नहीं बनी है, जबकि कई अन्य देशों ने इस दिशा में पहल की है। 2015-2016 में केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी 'नेशनल मेंटल हेल्थ सर्वे' में भी अकेलेपन का जिक्र नहीं किया गया। हालांकि, मानसिक स्वास्थ्य को संबोधित करने के लिए सरकार ने कई पहलें की हैं। 2017 में, 'मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम' लागू किया गया, जो मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच को सुनिश्चित करता है और मानसिक रोगियों के अधिकारों की रक्षा करता है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार और सुदृढ़ीकरण किया जा रहा है। वहीं वर्तमान में, भारत में बुजुर्गों से संबंधित दो राष्ट्रीय नीतियां मौजूद हैं, लेकिन उनमें भी अकेलेपन पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है। 1999 में जारी 'राष्ट्रीय बुजुर्ग नीति' में अकेलेपन का जिक्र सिर्फ एक बार हुआ है।

अकेलेपन और सामाजिक अलगाव की बढ़ती समस्या को देखते हुए, भारत में भी एक समग्र नीति की आवश्यकता महसूस की जा रही है, जो मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक सहभागिता और सामुदायिक समर्थन को बढ़ावा देने पर केंद्रित हो। इन नीतियों में सामुदायिक जुड़ाव को प्रोत्साहित करना, मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा को बढ़ावा देना, और सामाजिक समर्थन नेटवर्क को मजबूत करना शामिल हो सकता है। इससे न केवल मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच बढ़ेगी, बल्कि समाज में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता भी बढ़ेगी। सवाल सिर्फ यह है कि हम इसके लिए कितने तैयार हैं? **(सप्रेस)**

- हरीश बाथम (एम.एस.सी. (कृषि) एग्रोनॉमी स्कॉलर) कृषि विद्यालय, विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालियर
- अभय प्रताप सिंह तोमर (एम.एस.सी. (कृषि) एग्रोनॉमी स्कॉलर)
- डॉ. सचिन कुमार सिंह (विभाग प्रमुख)
- डॉ. मांडवी श्रीवास्तव (सहायक प्रोफेसर)

Jiharish093@gmail.com

अगेती मटर की खेती किसानों के लिए लाभकारी

मटर भारत में सबसे लोकप्रिय दलहनी व सब्ज़ी फसलों में से एक है। इसमें प्रोटीन (20-22 प्रतिशत), विटामिन और खनिज प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। मटर का उपयोग हरी सब्ज़ी, दाने और पशु चारे के रूप में किया जाता है। यह दलहनी फसल होने के कारण वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर करती है और मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है। आजकल अगेती (early) मटर की खेती किसानों के लिए विशेष अवसर लेकर आई है। यह किस्में कम समय में तैयार होती हैं और सर्दियों की शुरुआत में ही बाजार में पहुँच जाती हैं, जहाँ हरी मटर की कीमत सामान्य से दोगुनी-तिगुनी तक मिलती है। अगेती मटर की खेती से तात्पर्य मटर की ऐसी खेती से है जो सामान्य बुवाई के मौसम (नवंबर-दिसंबर) से पहले, यानी मटर की खेती का समय सितंबर माह के अंत से अक्टूबर के मध्य तक होता है। यह खेती विशेष रूप से उन किस्मों की होती है जो कम समय में पककर तैयार हो जाती हैं मटर की किस्म का चुनाव करते समय मिट्टी, जलवायु और पानी की उपलब्धता को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है।

अगेती मटर की विशेषताएँ

- जल्दी पकने वाली किस्में, 60-75 दिनों में तैयार।
- बाजार में सर्दियों की शुरुआत (नवंबर-दिसंबर) में ही हरी मटर उपलब्ध हो जाती है।
- फसल जल्दी निकलने से किसान रबी की अन्य फसलें जैसे गेहूँ, चना या आलू भी ले सकते हैं।
- उपज अच्छी तथा दाम ऊँचे, इसलिए लाभ दुगुना।

प्रमुख किस्में

अर्का अजीत, अर्का प्रगति, अर्का कार्तिक, IPFD-1, अजीत-1, पी.ई.एस. 10, पंत मटर 155,काशी अगेती, काशी पूर्वी, काशी नंदिनी, काशी शक्ति, पंत मटर 155, अर्ली बैजर, आर्केल, पंत मटर 13, जवाहर मटर आदि। अगेती मटर की कुछ उन्नत किस्में हैं।

पोषण और खाद प्रबंधन

मटर दलहनी फसल होने के कारण वायुमंडल से नाइट्रोजन स्थिर करती है, फिर भी बेहतर वृद्धि और उत्पादन के लिए पोषण एवं खाद प्रबंधन जरूरी है। बुवाई से पहले खेत में 15-20 टन अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद डालें जिससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहे। रासायनिक उर्वरकों में सामान्यतः 20 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फॉस्फोरस और 40 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर दें, जिसमें आधी नाइट्रोजन और पूरा फॉस्फोरस-पोटाश बुवाई के समय बेसल डोज़ के रूप में दें और शेष नाइट्रोजन 25-30 दिन बाद टॉप ड्रेसिंग करें। इसके साथ ही राइजोबियम तथा फॉस्फेट घुलनशील जीवाणु (पीएसबी) से बीज उपचार करने पर दाने की उपज और गुणवत्ता दोनों बढ़ती है। सल्फर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर देने से भी दानों की गुणवत्ता और प्रोटीन मात्रा में सुधार होता है।

बुवाई का सही समय और तरीका

अगेती मटर की बुवाई का सही समय सितंबर माह के अंत से अक्टूबर के मध्य तक माना जाता है, क्योंकि इस अवधि में तापमान अनुकूल रहता है और फसल जल्दी तैयार होकर ऊँचे दाम दिलाती है। बुवाई के लिए बीज की मात्रा 70-80 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होती है। बुवाई कतारों में करें, जहाँ कतार से कतार की दूरी लगभग 30 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 8-10 सेंटीमीटर रखी जाती है। बीज बोने से पहले उन्हें राइजोबियम और ट्राइकोडर्मा से उपचारित करें ताकि जड़ों में गांठें अच्छी तरह बनें और रोगों से सुरक्षा मिले। बीजों को 3-5 सेंटीमीटर गहराई पर बोना उचित होता है, जिससे अंकुरण समान और मजबूत होता है।

अगेती मटर की खेती में सिंचाई प्रबंधन

- मटर में सिंचाई की अधिक आवश्यकता नहीं होती क्योंकि यह रबी मौसम की फसल है।

पहली सिंचाई – बुवाई के 15-20 दिन बाद करें, जब पौधों की जड़ें जम रही हों।

दूसरी सिंचाई – फूल आने की अवस्था में करें; यह सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि नमी की कमी से फूल झड़ जाते हैं।

तीसरी सिंचाई – फलियों के बनने के समय दें; इससे फलियों का आकार और दाना भराव अच्छा होता है।

चौथी सिंचाई – आवश्यकता पड़ने पर दानों के भरने की अवस्था में करें।

- ध्यान रखें कि खेत में पानी कभी भी खड़ा न हो, क्योंकि इससे जड़ सड़न और फ्यूजेरियम विल्ट जैसी समस्याएँ आती हैं।
- हल्की और समय पर सिंचाई से उपज 20-25 प्रतिशत तक बढ़ सकती है।

अगेती मटर में खरपतवार प्रबंधन-

- मटर की फसल में शुरुआती 30-40 दिन सबसे महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि इस समय खरपतवार तेजी से बढ़ते हैं और पोषक तत्व, नमी व धूप छीन लेते हैं।

पहली निराई-गुड़ाई – बुवाई के 20-25 दिन बाद।

दूसरी निराई-गुड़ाई – लगभग 40 दिन पर करें।

मल्चिंग – खेत में पुआल/फसल अवशेष बिछाने से खरपतवार की वृद्धि कम होती है और नमी भी बनी रहती है।

रासायनिक नियंत्रण – बुवाई के तुरंत बाद पेंडीमेथालिन 1.0 लीटर प्रति हेक्टेयर 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

- खरपतवार नियंत्रण करने से फसल की पैदावार में 15-20 प्रतिशत तक की वृद्धि होती है।

अगेती मटर की तुड़ाई और उपज

पहली तुड़ाई का समय- अगेती मटर की किस्में बुवाई के 60-75 दिन बाद तोड़ाई योग्य हो जाती हैं।

तोड़ाई की अवस्था- फलियाँ जब हरी, कोमल और दाने दूधिया अवस्था में हों तब तोड़ाई करें, क्योंकि इसी अवस्था में दाने स्वादिष्ट और बाजार में अधिक पसंद किए जाते हैं।

तोड़ाई की विधि- फलियों को हाथ से सावधानीपूर्वक तोड़ें ताकि पौधों को नुकसान न हो और अगली तुड़ाई भी अच्छी हो।

तुड़ाई की आवृत्ति- मटर की फलियाँ एकसाथ नहीं पकतीं, इसलिए 3-4 बार अंतराल से तुड़ाई करनी पड़ती है।

हरित फली उपज- 80-100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त हो सकती है, जो किस्म और प्रबंधन पर निर्भर करती है।

दाना उपज- यदि दाने सुखाकर उपयोग किए जाएँ तो 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज मिल सकती है।

बाजार मूल्य- अगेती मटर बाजार में जल्दी आने के कारण सामान्य मटर से ऊँचे दाम (रू. 50-70 प्रति किलो तक) दिलाती है।

भंडारण-हरी फलियाँ जल्दी खराब हो जाती हैं, इसलिए तुरन्त बिक्री करें या ठंडी जगह पर सुरक्षित रखें। दाने सुखाकर लंबे समय तक भंडारित किए जा सकते हैं।

अगेती मटर में कीट एवं रोग प्रबंधन

मुख्य कीट

एफिड (महू)- पत्तियों व कोमल फलियों का रस चूसते हैं जिससे पौधे कमजोर होकर पीले पड़ जाते हैं।

नियंत्रण- नीम आधारित कीटनाशी 5 प्रतिशत या इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मि.ली./लीटर पानी का छिड़काव करें।

थ्रिप्स- पत्तियों पर सिल्वरिंग व सिकुड़न पैदा करते हैं।

नियंत्रण – थायोमेथोक्साम या स्पिनोसैड का छिड़काव करें।

कटवर्म- पौधों को जड़ से काटकर गिरा देते हैं।

नियंत्रण – खेत की अच्छी जुताई करें और लार्वा दिखाई देने पर क्लोरपायरीफॉस का प्रयोग करें।

मुख्य रोग

पाउडरी मिल्ड्यू- पत्तियों व तनों पर सफेद

पाउडर जैसी परत जम जाती है।

नियंत्रण – गंधक 0.2 प्रतिशत या कैराथेन का छिड़काव करें।

जंग – पत्तियों पर भूरे/गहरे धब्बे दिखाई देते हैं।

नियंत्रण- मैन्कोज़ेब 0.25 प्रतिशत या हेक्साकोनाज़ोल का छिड़काव करें।

पीला मोज़ेक – पत्तियाँ पीली होकर सिकुड़ जाती हैं, रोग एफिड से फैलता है।

नियंत्रण – रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट करें, बीज उपचार करें और एफिड का नियंत्रण करें।

जड़ सड़न/विल्ट- पौधे मुरझा जाते हैं और सूख जाते हैं।

नियंत्रण – बीज उपचार ट्राइकोडर्मा से करें और खेत में जलभराव न होने दें।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

अक्टूबर में लगाएं करौंदे के पौधे...

खूबसूरती को लगेंगे चांद

जी हां ! यदि आप घर में ही गार्डनिंग करते हैं तो अक्टूबर माह की शुरुआत में ही करौंदे के पौधे लगा सकते हैं...ये पौधे न केवल आपके गार्डन में चार चांद लगा देंगे वहीं ताजे करौंदे भी खाने के लिए मिलेंगे। कृषि जानकारों के अनुसार अक्टूबर का महीना करौंदे के पौधे लगाने के लिए श्रेष्ठ रहता है।

अक्टूबर का महीना इसे उगाने के लिए इसलिए सही माना जाता है क्योंकि इस दौरान बारिश होने के कारण मिट्टी में नमी बनी रहती है जो कि करौंदे के पौधे की ग्रोथ में मदद करता है। करौंदे का पौधा एक छोटा, झाड़ीदार पौधा है जो कि आसानी से घर में उगाया जा सकता है। इसके फलों में मौजूद विटामिन C, आयरन (Iron), और अन्य पोषक तत्व इसे शरीर के लिए बेहद ही फायदेमंद बनाते हैं। आप चाहें तो अपने बगीचे में लगे इसके स्वादिष्ट और शुद्ध फलों का इस्तेमाल जूस, अचार और चटनी बनाने के लिए भी कहा जाता है। इसके अलावा इसका इस्तेमाल कई तरह की बीमारियों में भी किया जा सकता है। बता दें कि, करौंदे में मौजूद फाइबर शरीर के पाचन तंत्र को सुधारने के साथ ही शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। इसके अलावा इसके सेवन से डायबिटीज और ब्लड प्रेशर को भी सुधारने में मदद मिलता है। करौंदे के पौधे को उगाने के लिए अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी को ही लें और उसमें कंपोस्ट खाद का इस्तेमाल जरूर करें। इसके बाद नर्सरी से लाए पौधों को मिट्टी में थोड़ी गहराई में लगाएं। ध्यान रहे कि पौधों के बीच की दूरी 4 से 5 फीट और कतार से कतार की दूरी 6 से 8 फीट हो। बता दें कि,करौंदे के पौधों को बढ़ने के लिए धूप की जरूरत होती है लेकिन पौधे को बहुत ज्यादा धूप से बचायें। करौंदे के पौधे को रोपाई के बाद खास खयाल की जरूरत होती है क्योंकि ये एक झाड़ीदार पौधा होता है इसलिए समय-समय पर इसकी कटाई जरूरी है। झाड़ीदार पौधा होने के कारण करौंदे के पौधे में कीट लगने का खतरा भी रहता है, जिनमें एफिड्स, थ्रिप्स, और सफेद मक्खियों जैसे कीट शामिल है। इन कीटों से पौधों को बचाने के लिए पौधे पर नीम तेल या साबुन के घोल का स्प्रे करें। बता दें कि, नर्सरी से पौधा लाकर लगाने पर आपको 3 से 6 महीने में फल मिलना शुरू हो जाते हैं।

विद्या (थूजा): कृषि और स्वास्थ्य दोनों में उपयोगी

खंडवा कृषि महाविद्यालय में शोध, स्वास्थ्य और पर्यावरण का संगम

कृषि महाविद्यालय खंडवा के अधिष्ठाता डॉ. दीपक हरि रानडे के शब्दो में-

है सजावटी पौधा, देता बड़ा ज्ञान, गुण हैं इतने, सब लें संज्ञान,
एक नाम विद्या भी इसका, कहें सब मानद विद्वान,
अंग्रेजी नाम है थूजा, इस सा नहीं कोई और दूजा,
मोरपंखी है इसका और नाम, वातावरण को शुद्ध करना इसका काम,
घना होकर प्राकृतिक बागड़ बनाये, बनती कई उत्कृष्ट दवायें,
बच्चे पत्तियों को पुस्तक में रख, कामना करते पाने की विद्या,
यही वो परम मित्र है, थूजा कहो या विद्या

कृषि में महत्व

महाविद्यालय के डॉ. मनोज कुरिल एवं डॉ. स्मिता अग्रवाल के अनुसार थूजा पौधा सामान्यतः सजावटी पौधे के रूप में जाना जाता है, लेकिन इसका कृषि में भी विशेष महत्व है। इसे प्राकृतिक बाड़ के रूप में प्रयोग किया जा सकता है, जिससे फसलों को तेज़ हवाओं से सुरक्षा मिलती है। इसकी घनी पत्तियाँ मिट्टी में नमी संरक्षण और पर्यावरणीय आर्द्रता बनाए रखने में सहायक हैं। शोध स्तर पर इसे ट्रैप क्रॉप के रूप में भी अध्ययन किया जा रहा है, जिससे कीट प्रबंधन में इसके संभावित योगदान को समझा जा सके।

कृषि महाविद्यालय खंडवा के प्रांगण में लगाए गए विद्या (थूजा) पौधे परिसर की शोभा बढ़ाने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण और वैज्ञानिक अध्ययन के लिए भी महत्वपूर्ण सिद्ध हो रहे हैं। इन पौधों को महाविद्यालय के विभिन्न हिस्सों में रोपा गया है ताकि छात्र इसकी विशेषताओं को नज़दीक से समझ सकें।

औषधीय उपयोग

होम्योपैथी में थूजा का उपयोग त्वचा रोगों, सर्दी-जुकाम, और श्वसन संबंधी विकारों के उपचार में किया जाता है। इसका अर्क रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक माना गया है। पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में इसे शरीर शुद्धि और रोग निवारण के लिए भी प्रयोग किया जाता रहा है।

धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व

थूजा का नाम ग्रीक शब्द "thuia" से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'धूप' या 'यज्ञ में प्रयुक्त सामग्री।' प्राचीन काल में इसकी लकड़ी और पत्तियाँ जलाकर वातावरण को शुद्ध किया जाता था। भारत में इसे 'विद्या' और कई स्थानों पर 'मोरपंखी' भी कहा जाता है। यह पवित्रता और शुद्धि का प्रतीक माना गया है।

पर्यावरणीय महत्व

थूजा पौधा पूरे वर्ष हरा-भरा रहता है। यह परिसर की सूक्ष्म जलवायु संतुलन बनाए रखने में सहायक है। यह कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर वायु को शुद्ध करता है और प्रदूषण नियंत्रण में योगदान देता है।

डॉ. दीपक हरि रानडे ने बताया 'विद्या (थूजा) पौधे का रोपण हमारे लिए केवल सौंदर्य का साधन नहीं है, बल्कि यह वैज्ञानिक अध्ययन का विषय भी है। इस पौधे में पर्यावरणीय स्थिरता, औषधीय क्षमता और संभावित कीट प्रबंधन जैसे कई पहलुओं पर शोध की संभावना है। विद्यार्थियों को इसके माध्यम से यह समझने का अवसर मिलेगा कि पौधे केवल जैव विविधता का हिस्सा नहीं, बल्कि कृषि और स्वास्थ्य विज्ञान के लिए भी अत्यंत उपयोगी साधन हैं।'

- **डॉ. दीपक हरि रानडे**
- **डॉ. मनोज कुमार कुरील**
- **डॉ. स्मिता अग्रवाल**
कृषि महाविद्यालय, खंडवा

निमाड़ के हरियर साक्षीः परंपरागत वृक्षों का संरक्षण और पर्यावरणीय शिक्षा की मिसाल

'जिन पेड़न के नीचे बैठ के दादा पढ़े, आज उँई फिर से जिंदा होवत हे...'

निमाड़ की मिट्टी में कुछ खास है - इसमें माही, ताप्ती के संग बहती विरासत, लोक परंपराओं की गूंज और हरियाली से उपजा अपनापन बसता है। यहीं, खंडवा के बी. एम. कृषि महाविद्यालय में कुछ ऐसे वृक्षों को संजीवनी दी जा रही है, जिनके नीचे कभी गाँव के बुज़ुर्ग बीड़ी सुलगाते चर्चा करते, बच्चे लट्टू घुमाते और महिलाएं चूल्हे के लिए पत्ते बटोरती थीं। इन्ही विलुप्तप्राय वृक्षों में से एक रोहणी जैसे वृक्ष नए संदर्भों में पुनर्जीवित हो रहे हैं—शिक्षा के साधन बनकर, जलवायु संकट के खिलाफ ढाल बनकर और निमाड़ की आत्मा के प्रतीक बनकर।

रोहिणी वृक्षः वनस्पति धरोहर की पुनर्खोज

प्राकृतिक वनस्पतियों की विविधता भारत की सबसे बड़ी धरोहरों में से एक है। दुर्भाग्यवश, अनेक ऐसे मूल वृक्ष हैं जो अब आमदृष्टि से ओझल हो गए हैं—या तो तेजी से हो रहे वनों की कटाई के कारण, या आधुनिकता की अंधी दौड़ में उनके उपयोग को भुला दिए जाने से। ऐसे ही एक दुर्लभ एवं पारंपरिक वृक्ष का नाम है रोहिणी। कृषि महाविद्यालय, खंडवा ने इस वृक्ष को संरक्षित कर वनस्पति संरक्षण और पारंपरिक ज्ञान के पुनरुद्धार की दिशा में एक अहम कदम उठाया है। निमाड़ी में कहावत है 'रोहणी जैसो जीम, सुख के थारा जावे नी' यानी मुसीबत में भी टस से मस ना हो।

यह वृक्ष भारत के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों — विशेषकर राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात और पंजाब में पाया जाता है। यह श्रेणी बद्ध रूप से संकटग्रस्त (vulnerable) प्रजातियों में गिना जाता है।

रोहिणी एक मध्यम आकार का वृक्ष है जिसकी

ऊँचाई लगभग 6 से 10 मीटर तक हो सकती है। इसकी छाल मोटी व दरारदार होती है, और पत्ते एकवर्ती (simple) होते हैं। वसंत ऋतु में इसमें खूबसूरत नारंगी-लाल रंग के फूल आते हैं, जो इसकी शोभा को और बढ़ा देते हैं।

इस वृक्ष की लकड़ी हल्की, मजबूत और टिकाऊ होती है, जिस कारण अतीत में इसका प्रयोग फर्नीचर, यंत्र, रथ, और धार्मिक कलाकृतियों में होता था।

औषधीय और पारंपरिक महत्वः रोहिणी की छाल आयुर्वेद में रक्तविकार, पीलिया और चर्म रोगों के उपचार में उपयोग की जाती है, इसकी लकड़ी जीवाणुनाशक मानी जाती है, पारंपरिक ग्रामीण समाज में इसे वर्षा संकेतक वृक्ष माना जाता था — मान्यता थी कि इसके फूलों की अधिकता वर्षा के अच्छे संकेत देती है।

खंडवा और कृषि महाविद्यालय की भूमिका

महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रानडे ने जानकारी दी कि खंडवा क्षेत्र, जहाँ प्राकृतिक रूप से अनेक देसी वृक्षों की जैव विविधता रही है, अब धीरे-धीरे शहरीकरण और भू-उपयोग परिवर्तन के कारण वनस्पति संकट में आ गया है। ऐसे में कृषि महाविद्यालय, खंडवा रोहिणी वृक्ष का रोपण और संरक्षण करने का प्रयास कर रहा है ।

क्या है अजोला खेती ?

• गरिमा सिंह • पूनम शर्मा • डॉ आकांक्षा शर्मा
• अनूप शुक्ला सहायक प्रोफेसर
(कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग)
एकेएस विश्वविद्यालय, सतना

अजोला की खेती में जलीय फर्न की एक अनोखी प्रजाति उगाना शामिल है, जिसे मच्छर, डकवीड, फेयरी मॉस और वॉटर फर्न जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता है। विशिष्ट फर्न के विपरीत, अजोला प्रजाति का एक विशेष और अत्यधिक छोटा रूप होता है, जो पारंपरिक फर्न के बजाय डकवीड या मॉस जैसा दिखता है। एक उल्लेखनीय प्रजाति, एजोला फ़िलिकुलोइड्स का एक प्रकाशित संदर्भ जीनोम भी है। दिलचस्प बात यह है कि इओसीन काल के दौरान, अजोला प्रचुर मात्रा में विकसित हुआ और महत्वपूर्ण कार्बन को अवशोषित किया। अजोला को आर्द्रभूमियों, मीठे पानी की झीलों और खाइयों में एक आक्रामक पौधा माना जा सकता है। इन पारिस्थितिक तंत्रों में इसकी उपस्थिति जैव विविधता और जलीय वातावरण की समग्र कार्यप्रणाली को काफी हद तक बदल सकती है।

तालाबों में अजोला उगाने पर चरण- दर- चरण मार्गदर्शिका

• कटाई के लिए अजोला की वांछित मात्रा के आधार पर तालाब का आकार निर्धारित करें। लगभग 2 मीटर लंबाई और 1 मीटर चौड़ाई वाला तालाब छोटे पैमाने पर खेती के लिए उपयुक्त है। तालाब की संरचना बनाने के लिए ज़मीन को समतल करें और ईंटें बिछाएँ।

• अवरोध प्रदान करने के लिए तालाब के तल पर पुरानी प्लास्टिक की बोरियाँ या चादरें रखें।

• पूरे तालाब को 150 गेज मोटाई की टिकाऊ प्लास्टिक शीट से ढक दें।

• प्लास्टिक शीटों को अपनी जगह पर बनाए रखने के लिए साइड की दीवारों पर ईंटें लगाकर उनके किनारों को सुरक्षित करें।

• लगभग 25 किलो क्लीया फैलाएं तालाब पर समान रूप से।

• 5 किलो गोबर और 30 ग्राम राजफॉस या मसूरी फॉस का मिश्रण मिट्टी पर समान रूप से लगाएं।

• तालाब में पानी की गहराई लगभग 10 सेमी बनाए रखें।

• गणना करें कि प्रति वर्ग मीटर तालाब में 500 ग्राम अजोला कल्चर की आवश्यकता होती है।

• 1-2 सप्ताह के भीतर, अजोला तालाब को पूरी तरह से ढक देगा, जो दर्शाता है कि यह कटाई के लिए तैयार है।

पशुधन चारे के रूप में अजोला की खेती के लिए सर्वोत्तम अभ्यास

भारत में प्राकृतिक संसाधन विकास परियोजना (एनएआरडीईपी) ने एक ऐसी खेती तकनीक विकसित की है जो पशुपालकों के लिए सरल और किफायती है। यह नाडेप विधि का सारांश दिया गया है-

• **जल निकाय बनाना** : सिलपॉलिन शीट को पेड़ की जड़ों से बचाने के लिए 2 × 2 × 0.2 मीटर का गड्ढा खोदें और इसे प्लास्टिक की बोरियों से ढक दें। चादर पर 10-15 किलोग्राम छनी हुई उपजाऊ मिट्टी समान रूप से फैलाएं।

• **घोल लगाना** : 2 किलो गोबर, 30 ग्राम सुपर फॉस्फेट और 10 लीटर पानी से बना घोल शीट पर डालें। स्तर को लगभग 10 सेमी तक बढ़ाने के लिए अधिक पानी डालें।

अजोला का परिचय- प्लेस ओ और शुद्ध अजोला कल्चर तेजी से बढ़ता है और गड्ढे को भर देता है जिससे प्रतिदिन 50 की फसल प्राप्त होती है। 0.5-1 किलोग्राम ताजा और शुद्ध अजोला कल्चर को पानी में डालें। यह तेजी से बढ़ेगा और 10-15 दिनों के भीतर गड्ढे को भर देगा, जिससे प्रतिदिन 500-600 ग्राम की फसल प्राप्त हो सकेगी।

पोषक तत्व प्रबंधन- 20 का मिश्रण डालें। अजोला गुणन को बढ़ावा देने के लिए हर पांच दिन में जी सुपर फॉस्फेट और 1 किलो गाय का गोबर, सूक्ष्म पोषक तत्व मिश्रण का साप्ताहिक जोड़ खनिज सामग्री को बढ़ा सकता है।

• भीड़भाड़ को रोकने के लिए अतिरिक्त बायोमास को नियमित रूप से हटाना।

• यदि आवश्यक हो तो छाया के साथ तापमान 25 डिग्री सेल्सियस से नीचे बनाए रखें।

• 5.5 और 7 के बीच पीएच का परीक्षण करना और उसे बनाए रखें।

• बिस्तर की मिट्टी और पानी को समय- समय पर बदलें।

• नाइट्रोजन निर्माण को रोकें, हर छह माह में बिस्तर की सफाई करें।

• अजोला को ताजे पानी में धोएं।

जल निकाय में अजोला वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए जैविक तरीके

पोषक तत्वों से भरपूर पानी- अजोला के विकास को समर्थन देने के लिए उच्च पोषक तत्वों, विशेष रूप से नाइट्रोजन और फास्फोरस के साथ पानी बनाए रखें।

वर्मीकम्पोस्ट अनुप्रयोग- मिट्टी की उर्वरता और पोषक तत्वों को बढ़ाने के लिए वर्मीकम्पोस्ट लागू करें, जिससे अप्रत्यक्ष रूप से अजोला की वृद्धि को लाभ होता है।

जैविक उर्वरक- जल निकाय को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने के लिए गाय के गोबर या मुर्गी खाद जैसे जैविक उर्वरकों का उपयोग करें।

हरी खाद वाली फसलें- जलस्रोत के आसपास फलियां जैसे नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाले पौधे उगाएं। पानी में शामिल होने पर, वे नाइट्रोजन छोड़ते हैं, जिससे अजोला के विकास में सहायता मिलती है।

कम्पोस्ट चाय- पोषक तत्वों और पीआर विकास के साथ कंपो पानी से बने कंपो उर्वरक को लागू करें।

मल्चिंग- पोषक तत्वों की हानि को रोकने और नमी बनाए रखने के लिए जल निकाय के चारों ओर सूखे पत्तों या पुआल जैसी जैविक गीली घास सामग्री का उपयोग करें।

रासायनिक प्रदूषकों से बचें- रासायनिक उर्वरकों, शाकनाशियों और कीटनाशकों को कम करें या समाप्त करें, क्योंकि वे अजोला के विकास पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

अजोला उत्पादन बढ़ाने के लिए युक्तियाँ और तकनीकें

पोषक तत्व अनुपूरण- अजोला वृद्धि के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने के लिए हर दो सप्ताह में एक बार 1 किलो गाय का गोबर और 10-20 ग्राम राजफोस (रॉक फॉस्फेट) डालें।

जल प्रतिस्थापन- तालाब से एक- चौथाई पानी निकालें और इसे हर दो सप्ताह में एक बार नए ताजे पानी से भरें। यह पानी की गुणवत्ता बनाए रखने और अतिरिक्त पोषक तत्वों के निर्माण को रोकने में मदद करता है।

मृदा नवीनीकरण- मौजूदा मिट्टी को हटा दें तालाब में समय- समय पर 5 किलो ताजी मिट्टी डालें। यह अजोला के विकास के लिए पोषक तत्वों से भरपूर वातावरण सुनिश्चित करता है।

तालाब की सफाई और दोबारा शुरू करना- हर छह महीने में तालाब को खाली करें और नई संस्कृति और मिट्टी के साथ अजोला की खेती फिर से शुरू करें। यह किसी भी संदूषण या कीट/ बीमारी के संचय को रोकने में मदद करता है।

अजोला की खेती के लिए इष्टतम स्थितियाँ- तापमान, प्रकाश और पीएच

जल अम्लता (पीएच)

• अजोला 3.5 से 10 पीएच रेंज के भीतर जीवित रह सकता है।

• यह 3.5 से कम पीएच वाली अत्यधिक अम्लीय मिट्टी में नहीं उग सकता है।

• IRRI2 माध्यम के लिए पसंदीदा पीएच रेंज 5.5 और 6.5 के बीच है।

तापमान

• अजोला तापमान की एक विस्तृत श्रृंखला के प्रति सहनशीलता प्रदर्शित करता है।

• कुछ अजोला प्रजातियाँ -5°C तक के तापमान में भी जीवित रह सकती हैं।

• आमतौर पर 35°C से ऊपर वृद्धि कम हो जाती है, और 45°C से अधिक तापमान के लंबे समय तक संपर्क में रहने से बचा नहीं जा सकता है।

• अधिकांश प्रजातियाँ 18°C और 28°C के बीच तापमान में पनपती हैं, लेकिन कुछ प्रजातियाँ जैसे- पिन्नाटा, मेक्सिकाना और कैरोलिनियाना 30°C तक का तापमान सहन कर सकती हैं।

रोशनी

• अजोला और उसके सहजीवी भागीदार अनाबेना में प्रकाश संश्लेषण और नाइट्रोजन गतिविधि विनियमन में प्रकाश महत्वपूर्ण है।

• वसंत के दौरान उच्च अक्षांशों को छोड़कर, अजोला प्रजातियाँ पूर्ण सूर्य के प्रकाश को कम पसंद करती हैं।

अजोला खेती की व्यावसायिक क्षमता : बाजार विश्लेषण और अवसर

बढ़ती मांग : बढ़ती मांग जैविक एवं टिकाऊ कृषि के लिए प्रथाओं ने एक अनुकूल बाजार तैयार किया है। इसके प्राकृतिक उर्वरक गुण और वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर करने की क्षमता इसे एक बनाती हैकिसानों के लिए आकर्षक विकल्प।

पशुधन आहार: अजोला प्रोटीन से भरपूर होता है, विटामिन और खनिज, इसे पशुओं के लिए एक पौष्टिक आहार बनाते हैं। उच्च गुणवत्ता वाले पशु आहार की बढ़ती मांग अजोला की खेती के लिए एक आकर्षक बाजार अवसर प्रस्तुत करती है।

जैव उर्वरक उत्पादन : अजोला की नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने की क्षमता इसे एक उत्कृष्ट जैव उर्वरक बनाती है। जैविक उर्वरकों की मांग बढ़ रही है, जिससे अजोला- आधारित जैव उर्वरकों के लिए संभावित बाजार उपलब्ध हो रहा है।

अपशिष्ट जल उपचार: पोषक तत्वों और प्रदूषकों को अवशोषित करने की क्षमता के कारण अजोला अपशिष्ट जल उपचार में प्रभावी है। इससे अपशिष्ट जल उपचार संयंत्रों और पर्यावरण- अनुकूल जल प्रबंधन प्रणालियों में अजोला की खेती के अवसर खुलते हैं।

टिकाऊ कृषि : मिट्टी की उर्वरता में सुधार करने और सिंथेटिक उर्वरकों के उपयोग को कम करने की अपनी क्षमता के साथ, एजोला टिकाऊ कृषि सिद्धांतों के अनुरूप है। यह इसे पर्यावरण के अनुकूल कृषि पद्धतियों के बढ़ते बाजार में अच्छी स्थिति में रखता है।

लघु- स्तरीय प्रणालियों में अजोला विकास को बढ़ावा देना: घरेलू बागवानों के लिए युक्तियाँ

पर्याप्त धूप प्रदान करें: अजोला पूर्ण सूर्य के प्रकाश में पनपता है, इसलिए सुनिश्चित करें कि इसे प्रत्येक दिन कम से कम 4-6 घंटे सीधी धूप मिले।

पानी का तापमान बनाए रखें: अजोला 20-30°C (68- 86°F) के बीच पानी का तापमान पसंद करता है। पानी को गर्म रखें, खासकर ठंड के महीनों में।

पानी के पीएच को नियंत्रित करें: एजोला 6.5-7.5 के बीच थोड़ा अम्लीय से लेकर तटस्थ पीएच स्तर को प्राथमिकता देता है। नियमित रूप से पानी का परीक्षण करें और यदि आवश्यक हो तो समायोजन करें।

पोषक तत्वों की पूर्ति : अजोला को अतिरिक्त पोषक तत्वों से लाभ होता है। इसकी वृद्धि को बढ़ाने के लिए जैविक खाद या कम्पोस्ट चाय मिलाने पर विचार करें।

नियमित कटाई : भीड़भाड़ को रोकने और नई वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए नियमित रूप से अजोला की कटाई करें।

देश में मान्य 146 अधिसूचित बायोस्टिमुलेंट्स की सूची

देश एवं प्रदेश में नकली उर्वरक, बीज, कीटनाशक और बायोस्टिमुलेंट्स की समस्याओं एवं शिकायतों को मद्देनजर रखते हुए केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि केवल 146 अधिसूचित बायोस्टिमुलेंट्स ही भारत में मान्य है। सूची इस प्रकार है-

Biostimiulant

1. Humic Acid 5 % (Powder)
2. Potassium Humate 49% (Powder)
3. Humates and Fulvates 22% (Liquid)
4. Humates (12.5%) (Liquid)
5. Humic Acid 51 % (Granular)
6. Ascophyllum nodosum 15% (Liquid)
7. Sargassum tenerrimum 2% (Granular)
8. Kappaphycus alvarezii 24% (Liquid)
9. Sargassum tenerrimum 10% (Liquid)
10. Adhatoda vassica (Powder)
11. Mixture of Humic Acid, Amino Acid, Vitamins and Bio-chemicals (powder)
12. Humic Acid 6% (Liquid)
13. Humic acid 1.5% (Granules)
14. Humic and Fulvic acid 25.05% (Liquid)
15. Humic and Fulvic acid 76% (Powder)
16. Ascophyllum nodosum 7% (Liquid)
17. Kappaphycus alvarezii 7.2% (Liquid)
18. Kappaphycus alvarezii 9.5% (Liquid)
19. Kappaphycus alvarezii and Sargassum swartzii in ratio of 1:1 (Liquid)
20. Spirulina 10% (Liquid)
21. Adhatoda vasica extract 2% (Liquid)
22. Mixture of seaweed extract and algal extract (Liquid)
23. Mixture of Seaweed extract; Humic and Fulvic acid, Amino acids and Vitamins (Liquid)
24. Mixture of Antioxidant and Vitamins (Powder)
25. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Liquid)
26. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Powder)
27. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Granules)
28. Mixture of Botanical extract and Seaweed extract (Liquid)
29. Protein hydrolysate 62.1% (Animal Source) (Liquid)
30. Protein Hydrolysates 36.04% (Animal Source) (Liquid)
31. Protein Hydrolysates 25% (Plant Source) (Liquid)
32. Vinasse residue (Glutamic acid 18%)(Liquid)
33. Protein hydrolysate 16.9% (Plant Source) (Liquid)
34. Bacterial biomass hydrolysate (Amino acids 2%) (Liquid)
35. Protein hydrolysate 1.5 % (Plant Source) (Granules)
36. Protein hydrolysate 62.5 % (Animal Source) (Liquid)
37. Protein hydrolysate (Amino acids 10 %) (Plant. Source) (Liquid)
38. Protein hydrolysate (Amino acids 5 %) (Plant Source) (Powder)
39. Protein hydrolysate (Amino acids 20 %) (Plant Source) (Liquid)
40. Protein hydrolysate 27% (Plant Source) (Powder)
41. Lipo-chitooligosaccharides from Escherichia coli (Liquid)
42. Lipase from Saccharomyces cerevisiae (Powder)
43. Microbial cell (Methylococcus capsulatus): 1 x 10^9 cfu/g (Powder)
44. Microbial Consortium 1 x 10^7 cfu/ g
45. 2- Bromo- (I H)- Indole- 3 Carboxaldehyde 1ppm (Liquid)
46. Humic and Fulvic acid (29%) (Liquid)
47. Humate 7.15 % (Liquid)
48. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 22% (Liquid)
49. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 99.52 % (Liquid)
50. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 97.52% (Liquid)
51. Mixture of Protein Hydrolysate and Antioxidant (Liquid)
52. Mixture of Protein hydrolysate, seaweed extract and humic acid (Liquid)
53. Protein hydrolysate 62.5 % (Animal source) (Liquid)
54. Protein hydrolysate (Bacterial biomass) 100 % (Powder)
55. L-Pyroglutamic acid (Pidolic acid) 10 % (Liquid)
56. Antioxidant (Glycyrrhizic acid) 1 % (Powder)
57. Humic acid 50% (Powder)
58. Humic acid and Fulvic acid 45.1% (Crystal)
59. Humic acid- 7.1% (Granule)
60. Humic acid 19.6 % (Liquid)
61. Seaweed (Sargassum wightii) extract 35 % (Powder)
62. Seaweed (Sargassum wightii) extract 5 % (Granuler)
63. Seaweed (Sargassum wightii) extract 10 % (Liquid)
64. Seaweed (Sargassum wightii) extract 4 % (Granules)
65. Seaweed (Kappaphycus alvarezii) extract- 17% (Liquid)
66. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 18.4% (Liquid)
67. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 22% (Liquid)
68. Mixture of humic substances and seaweed extract (Liquid)
69. Mixture of seaweed extract and vitamin (Liquid)
70. Mixture of Protein hydrolysate and Humic acid (Granule)
71. Mixture of Seaweed extract, Potassium Humate and Protein Hydrolysates (Liquid)
72. Mixture of Seaweed extract and Humic acid (Granule)
73. Mixture of Seaweed extract, Humic acid and Fulvic acid (Granules)
74. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Powder)
75. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Powder)
76. Mixture of Protein hydrolysate and Humic acid (liquid)
77. Mixture of Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract, Protein hydrolysate and botanical extract (Liquid)
78. Protein hydrolysate 15% (Animal source) (Liquid)
79. Protein Hydrolysate (Plant Source) 25 % (Powder)
80. Protein hydrolysate 20% (Plant source) (Liquid)
81. Protein hydrolysate 2% (Plant source) (Granule)
82. Protein Hydrolysate 27.5 % (Animal source) (Liquid)
83. Protein hydrolysate (Plant Source) (Liquid)
84. Protein hydrolysate 20% (Liquid)
85. Cell free extract of Pseudomonas putida (Liquid)
86. Phenolic compound (3 %) (Liquid)*
87. S- Abscisic acid (8.3%) (Granule)
88. Humalite 100% (Granular powder)
89. Humic acid and Fulvic acid 19.5 % (Liquid)
90. Humalite 82% (Powder)
91. Humic acid and Fulvic acid 85% (Powder)
92. Humic substance 16% (Liquid)
93. Humic substances 6% (Liquid)
94. Humic acid 0.27% (Liquid)
95. Humic acid 1 % (Liquid)
96. Humic substances 1.5% (Granule)
97. Humic substances 6% (Liquid)
98. Humic acids 40% (Powder)
99. Humic acid- 1.2 % (granules)
100. Humic acid 4% (Liquid)
101. Sargassum tenerrimum 1.2% (Granules)
102. Sargassum tenerrimum 10% (Liquid)
103. Ascophyllum nodosum 90% (Flakes)
104. Ascophyllum nodosum 5% (Powder)
105. Kappaphycus alvarezii 4.4% (liquid)
106. Kappaphycus alvarezii 19.5% (liquid)
107. Ascophyllum nodosum 20% (liquid)
108. Ascophyllum nodosum 22% (liquid)
109. Durvillaea potatorum 7.5% (liquid)
110. Carrabiitol (Kappaphycus alvarezii) 80% (Powder)
111. Ascophyllum nodosum 98% (liquid)
112. Sargassum tenerrimum 10% (II) (liquid)
113. Adhatoda vasica extract 2% (Liquid)
114. Brassica juncea seed extract– 0.2% (Liquid)
115. Cytokinin (Zea mays kernel) 0.2% (Liquid)
116. Basil oil (Eugenol) 2% (Liquid)
117. Mixture of Seaweed and blue green algal extract (Liquid)
118. Mixture of Protein Hydrolysate and Seaweed extract (Liquid)
119. Mixture of Seaweed extract, Protein Hydrolysate and Humic acid (Granule)
120. Mixture of Seaweed extract, Protein Hydrolysate and Humic acid (Liquid)
121. Mixture of Seaweed extract, Protein Hydrolysate and Humic acid (Powder)
122. Mixture of Seaweed extract, Protein Hydrolysate and Humic acid (Granule)
123. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (powder)
124. Mixture of Humic acid and Protein hydrolysate (Liquid)
125. Glutamic acid 5% (Powder)
126. Protein hydrolysate 46.9% (Animal source) (Liquid)
127. Protein Hydrolysate 29.34% (Animal source) (Liquid)
128. Protein Hydrolysate 12% (Animal source) (Liquid)
129. Protein Hydrolysate 68.33% (Animal source) (Liquid)
130. Protein hydrolysate 16% (Animal source) (Liquid)
131. Glycine 5% (Powder)
132. Protein hydrolysate 18% (Animal source) (Liquid)
133. Protein hydrolysate 54% (Animal source) (Liquid)
134. Protein hydrolysate 20% (Plant source) (liquid)
135. Proline 1% (Liquid)
136. Amino acids (microbial source) 14% (Liquid)
137. Amino acids (microbial source) 40% (Powder)
138. γ-Polyglutamic acid from Bacillus subtilis (Liquid)
139. Protease and Cellulase enzyme from Bacillus sp. (Liquid)
140. Harpin $\alpha\beta$ from Escherichia coli (Granule)
141. Non Saccharomyces yeast (Wickerhamomyces anomalus) 20 % (Powder)
142. Homobrassinolide- 0.04% (Liquid)
143. Homobrassinolide- 0.03% (liquid)
144. Vitamin B3 (Nicotinamide) 3.25% (liquid)
145. Vitamin (Alpha Tocopherol) 1% (Liquid)
146. Phenolic compounds 3% (Liquid)*

स्रोत : कृषि मंत्रालय, भारत सरकार

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

पौष्टिकता से भरपूर खजूर

खजूर विश्व के सबसे पौष्टिक फलों में से एक है। सदियों से यह मध्यपूर्व एशिया और उत्तरी अफ्रीका के रेगिस्तानी इलाकों का प्रमुख भोजन बना हुआ है क्योंकि वहाँ इसके सिवा और कुछ उत्पन्न नहीं होता। यह ताज़ा और सूखा, दोनों तरह के फलों में गिना जा सकता है। पेड़ पर पके खजूर ज्यादा स्वादिष्ट होते हैं। लेकिन जल्दी खराब हो जाने की वजह से इसे धूप में सुखाया जाता है। ताज़े खजूर के मुकाबले सूखे खजूर में रेशों की मात्रा अधिक होती है। खजूर में पौष्टिक तत्व काफी मात्रा में होते हैं। इसके सेवन से ग्लुकोज और फ्रक्टोज के रूप में नैसर्गिक शक्कर हमारे शरीर को मिलती है। इस तरह की शक्कर शरीर में शोषण के लिए तैयार रहती है, इसलिए यह आम शक्कर से अच्छी होती है। रमज़ान के पवित्र महिने में खजूर खा कर ही उपवास की समाप्ति की जाती है।

खजूर अपने आप में एक टॉनिक भी है। खजूर के साथ उबला हुआ दूध पीने से ताकत मिलती है। खजूर को रात भर पानी में भिगो कर रखिये। फिर इसी में थोड़ा मसल कर उसका बीज निकाल दीजिए। यह हफ्ते में कम से कम दो बार सुबह लेने से अपने दिल को मजबूती मिलती है। यदि कब्ज की शिकायत है तो रात भर भिगाया हुआ खजूर सुबह महीन पीस कर लेने से यह शिकायत दूर हो सकती है।

पेड़ भी उपयोगी

खजूर के पेड़ का हर हिस्सा उपयोगी होता है। इसकी पत्तियाँ और तना घर के लिए लकड़ी बाड़ और कपड़े बनाने के काम आते हैं। पत्तियों से रस्सी, सूत और धागे बनाए जाते हैं जिनके प्रयोग से सुंदर टोकरियों और फर्नीचरों का निर्माण होता है। फल की डंडियों और पत्तियों के मूल हिस्से इंधन के काम आते हैं। खजूर से अनेक खाद्य पदार्थों का निर्माण होता है जिनमें सिरका, तरह-तरह की मीठी चटनियाँ और अचार प्रमुख हैं। अनेक प्रकार के बेकरी उत्पादों के लिए इसके गूदे का प्रयोग होता है। अरबी व्यंजन कानुआ और भुने हुए खजूर के बीज सारे अरबी समाज में लोकप्रिय हैं। यहाँ तक कि इसकी कोपलों को शाकाहारी सलाद में अत्यंत स्वास्थ्यवर्धक समझा जाता है। इससे निकलने वाले खजूरी रस और उससे तैयार किए हुए मद्य तथा गुड़ का प्रचुर उपयोग होता है।

गुण

खजूर के फल बहुत पौष्टिक व शक्तिवर्धक होते

हैं। फलों के गूदे में लगभग 20 प्रतिशत नमी, 60.65 प्रतिशत शर्करा, 2.5 प्रतिशत रेशा, 2.5 प्रतिशत प्रोटीन, 2 प्रतिशत से कम वसा व खनिज तत्व तथा विटामीन एए विटामीन बी.1 (थायमीन), विटामीन सी, नियासिन तथा विटामीन बी.2 (राईबोफलेबिन) पाए जाते हैं। एक किलोग्राम खजूर के फलों से 3100 कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। खजूर के फलों को खाने से रक्तवर्धक तथा कब्ज दूर करने मे सहायक होते है इसमे औषधीय गुण भी पाये जाते है। शीतकाल में खजूर सबसे अधिक लोकप्रिय मेवा माना जाता है। खजूर रेगिस्तानी सूखे प्रदेश का फल है। प्रकृति की यह अनुपम देन खास ऐसे प्रदेशों के लिए ही है, जहां जिन्दगी बड़ी कठिन होती है और जहां बरसात या पीने के पानी की कमी होती है। इसके पेड़ हमें जीवन से लड़ना सिखाते हैं, इसीलिए इसके खाने का प्रचलन ज्यादातर सूखे रेगिस्तानी इलाकों में ही होता है। सूखे खजूर को छुहारा या खारकी कहते हैं। पिंड खजूर भी इसका दूसरा नाम है। श्वांस की बीमारी में इसका शहद अत्यन्त लाभप्रद होता है। इससे पाचन शक्ति बढ़ती है तथा यह ठंडे या शीत गुणधर्म वाला फल माना जाता है।

कितना खाएं

विशेषज्ञों के अनुसार 100 ग्राम से अधिक खजूर नहीं खाने चाहिए। इससे पाचन शक्ति खराब होने का भय रहता है। अगर कोई बहुत ही दुबला पतला हो, तो खजूर खाकर दूध पीने से उसका वजन भी बढ़ जाता है। यद्यपि खजूर हर प्रकार से गुणकारक है, परन्तु इसमें विरोधाभास भी पाया जाता है। शीतकाल में जो इसे खाते हैं, वे इसे गरम मानते हैं। आयुर्वेद ग्रंथों में इसे शीतल गुण वाला माना है, इसलिए गरम तासीर वालों को यह खूब उपयोगी व माफिक आता है। ठंडा आहार जिनके शरीर के अनुरूप नहीं होता, उन्हें खजूर नहीं खाना चाहिए। खजूर एक तरह से अमृत के समान है। यह आंखों की ज्योति व याददाश्त भी बढ़ाता है। दांतों से लहू निकले या मसूड़े खराब हों, तो यह दवा का काम करता है। इसके खाने से बाल कम झड़ते हैं। खजूर व उसका शहद एक तरह से कुदरत की अनुपम देन हैं, इसलिए खूब खाएं व खूब खिलाएं।

स्वास्थ्य शिक्षण

मक्का का पौष्टिक दैनिक आहार

● डॉ. अल्पना शर्मा ● डॉ. मृगेन्द्र सिंह ● डॉ. बी. के. प्रजापति
● गुरूप्रीत गांधी ● दीपक चौहान ● भागवत प्रसाद पन्द्रे
कृषि विज्ञान केन्द्र, शहडोल

पौष्टिक लड्डू:

सामग्री- मक्का आटा - 100 ग्राम, चना बेसन- 50 ग्राम, मूंगफली - 50 ग्राम, तिल 50 ग्राम, घी या तेल - 85 ग्राम, शक्कर - 100 ग्राम।

विधि:- 1. मक्का आटा, बेसन को अलग-अलग सुनहरा भूरा रंग होने तक घी में भून लें।

2. मूंगफली को भूनकर छिलका निकाल लें।

3. तिल को भून लें।

4. फिर सारी सामग्री को मिलाकर इसमें पिसी शक्कर मिलाकर लड्डू बांध लें।

मक्का की खीर:-

सामग्री- मक्का दलिया- 20 ग्राम, दूध - 250 मिली, शक्कर-20 ग्राम, इलायची।

विधि:-दूध उबाल लें। इसमें मक्के की दलिया डाल कर धीमी आंच पर पकायें इसमें इलायची पाउडर व शक्कर मिला दें।

मक्के की खिचड़ी:-

सामग्री- मक्के की दलिया - 50 ग्राम, घी-10 ग्राम, नमक-1 ग्राम, हल्दी पाउडर -1 ग्राम, जीरा-1 चम्मच, पानी-450 मिली, मूंग दाल - 50 ग्राम, हरी मिर्ची-1 ग्राम, धनियां स्वादानुसार।

विधि:- कुकर में तेल गर्म करके इसमें जीरा, मिर्च का बघार दें। इसमें दाल, मक्के की दलिया भून लें और हल्दी, नमक, पानी, डालकर पका लें।

मक्के का मीठा दलिया:-

सामग्री:- मक्का का दलिया-50 ग्राम, पानी-200 मिली, दूध-150 मिली.,शक्कर-15 ग्राम।

विधि:- मक्का के दलिया को भूनकर फिर पानी में अच्छी तरह पकायें। इसमें दूध और शक्कर मिलाकर 5 मिनट और पकायें।

पकोड़ा:-

सामग्री:- मक्का आटा -100 ग्राम, प्याज-150 ग्राम, लहसुन-5 ग्राम, अदरक-5 ग्राम, मिर्च हरी-5 ग्राम, तेल एवं नमक - जरूरत अनुसार।

विधि:- मक्के के आटे में कटी प्याज, अदरक, मिर्च, लहसुन, और मसाले मिलाकर पानी से घोल बना लें। तेल गर्म होने पर तैयार मिश्रण से पकोड़े बनाकर छान लें।

मीठे पुए:-

सामग्री:- मक्के का आटा - 150 ग्राम, शक्कर-50 ग्राम, गेहूँ आटा-50 ग्राम, तेल-तलने के लिये।

विधि:- मक्के का आटा एवं गेहूँ के आटे को मिला लें इसमें शक्कर डालकर पानी से घोल बना लें। तैयार घोल की एक-एक चम्मच गर्म तेल में डालकर पुए जैसे तल लें।

मक्के की पूरी:-

सामग्री:- मक्का आटा -100 ग्राम, गेहूँ आटा -100 ग्राम, चना आटा - 100 ग्राम, अजवायन -100 ग्राम, नमक-1 चम्मच, तेल -तलने के लिये।

विधि:- 1. आटे को छन्नी से छान लें और उसमें नमक अजवायन मिलाकर पूरी का कड़ा आटा गूंद लें।

2. छोटे गोले बनाकर पूरी बेलकर सुनहरे होने तक तल लें।

योग से रहें निरोग

जोड़ों का दर्द - सर्दी में ज्यादा उम्र के लोगों में जोड़ों का दर्द या जकड़न आदि की समस्याएं काफी आम होती हैं। इसे दूर करने के लिये सूक्ष्म व्यायाम है जिसमें शरीर के हर जोड़ जिसमें कंधे, कमर, घुटने की गतिविधियां शामिल हैं। इस व्यायाम में सभी ज्वाइंट्स का रोटेशन और लूजिंग करना होता है।

अस्थमा या एलर्जी- अस्थमा या एलर्जी से ग्रस्त लोगों के लिये वाकिंग और ब्रीदिंग पर सबसे ज्यादा जोर दिया जाता है। ब्रीदिंग एक्सरसाइज में डॉग ब्रीदिंग, टाइगर ब्रीदिंग आदि शामिल हैं। यह सभी क्रियाएं श्वांस रोगों के साथ ही डायबिटीज, डिप्रेशन आदि के लिये भी फायदेमंद हैं।

यह है पर्याप्त- स्वस्थ रहने के लिये कम से कम पवन मुक्तासन क्रिया, लेग राइजिंग और सूर्य नमस्कार करना चाहिए। इसके अलावा भुजंगासन, वक्रासन, अर्धमश्येन्द्रआसन, अर्धचक्रासन, पद्महस्तासन करना चाहिए। साथ ही प्राणायाम नाडी शोधन करना चाहिए। वे लोग जिन्हें चक्कर आते हैं उन्हें अर्धचक्रासन नहीं करना चाहिए।

पाक्षिक पंचांग

29 सितम्बर से 12 अक्टूबर 2025
विक्रम संवत् 2082
आश्विन शुक्ल 7 से कार्तिक कृष्ण 6 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
29	सितम्बर	सोम	आश्विन शुक्ल	7 सरस्वती आव्हान
30	सितम्बर	मंगल	----------	8 महाष्टमी व्रत
1	अक्टूबर	बुध	----------	9 दुर्गा नवमी व्रत
2	अक्टूबर	गुरु	----------	10 विजयादशमी
3	अक्टूबर	शुक्र	----------	11 पापांकुशा एकादशी पंचक 6.37 शाम से
4	अक्टूबर	शनि	----------	12 प्रदोष व्रत, पंचक
5	अक्टूबर	रवि	----------	13 पंचक
6	अक्टूबर	सोम	----------	14 शरद पूर्णिमा, पंचक
7	अक्टूबर	मंगल	----------	15 स्ना.दा. पूर्णिमा पंचक 3.18 रात तक
8	अक्टूबर	बुध	कार्तिक कृष्ण	1/2
9	अक्टूबर	गुरु	----------	3
10	अक्टूबर	शुक्र	----------	4 करवा चौथ व्रत
11	अक्टूबर	शनि	----------	5
12	अक्टूबर	रवि	----------	6 स्कंध षष्ठी व्रत

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

बैगन की खेती से 2 लाख रुपए का लाभ

रायपुर। रायगढ़ जिले के लैलूंगा विकासखंड के ग्राम झगरपुर के प्रगतिशील किसान श्री खगेश्वर प्रधान ने यह साबित कर दिखाया है कि यदि पारंपरिक पद्धतियों के साथ नवाचार और वैज्ञानिक तकनीक को जोड़ा जाए, तो खेती एक अत्यंत लाभदायक व्यवसाय बन सकती है। उन्होंने अपने एक एकड़ खेत में बैगन की उन्नत खेती कर लगभग दो लाख रुपए का शुद्ध लाभ अर्जित किया। अपनी इस उल्लेखनीय सफलता से श्री प्रधान ने इस वर्ष भी एक एकड़ और भूमि में बैगन की उन्नत खेती प्रारंभ की है और अब वे अधिक उत्पादकता के लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

श्री प्रधान ने वैज्ञानिक पद्धति के साथ बैगन की खेती के लिए उच्च गुणवत्ता वाले बीजों का चयन किया और उद्यानिकी विभाग से तकनीकी मार्गदर्शन लिया। उन्होंने विभाग द्वारा समय-समय पर प्रदान किए गए परामर्श और योजनाओं के लाभ से खेती को आधुनिक स्वरूप दिया। श्री प्रधान ने संतुलित जैविक खाद, आधुनिक सिंचाई व्यवस्था और समयबद्ध पौध संरक्षण उपायों को अपनाया, जिससे फसल को उत्कृष्ट पोषण और सुरक्षा प्राप्त हुई। इन नवाचारों के परिणामस्वरूप श्री प्रधान ने प्रति एकड़ 123 क्विंटल बैगन का उत्पादन किया, जो पारंपरिक खेती की तुलना में दोगुनी है।

किसान श्री प्रधान को बैगन की खेती में कुल 46 हजार रुपए की लागत आयी और बाजार में बैगन को 20 रुपए प्रति किलोग्राम का मूल्य प्राप्त हुआ। इस प्रकार उन्हें कुल 2 लाख 46 हजार रुपए प्राप्त हुए। श्री प्रधान को लगभग 2 लाख रुपए का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ।

कम लागत से गेहूं में मिलेगा ज्यादा मुनाफा

रायपुर। परंपरागत विधि की अपेक्षा उन्नत तकनीकी से गेहूं की फसल से किसानों को अधिक लाभ हो रहा है। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की मंशानुरूप में कृषि विभाग और उद्यान विभाग के द्वारा कृषकों को उन्नत तकनीकी से खेती करने के लिए निरंतर प्रेरित किया जा रहा है। फरसाबहार विकासखण्ड के ग्राम बोखी के 60 वर्षीय कृषक श्री गणेश राम यादव ने बताया कि वे परंपरागत देशी विधि से खेती करते थे, जिससे प्रति एकड़ 4 से 5 हजार रूपये शुद्ध आय प्राप्त होती थी। इस वर्ष एसएमएसपी योजना अंतर्गत 0.400 हे. क्षेत्र में उन्नत तकनीकी से गेहूं फसल किस्म जीडब्ल्यू 322 लगाया था, जिससे उन्हें 7 क्वि. प्रति एकड़ उपज प्राप्त हुई। इस विधि के खेती से उन्हें शुद्ध आय 16000 रूपये प्राप्त हुआ।

ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी क्षेत्र फरसाबहार ने उन्नत तकनीकी से खेती करने हेतु प्रेरित और प्रोत्साहित करते हुए किसानों को गेंहू बीज प्रदाय किए थे। फसल प्रदर्शन को देख कर अन्य कृषकों द्वारा आगामी रबी की फसल में उन्नत तकनीकी से खेती करने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा। किसान गणेश राम यादव भी आगामी वर्ष गेंहू फसल की खेती उन्नत तकनीकी को अपनाकर अधिक क्षेत्र में गेहूं की फसल लगाएंगे ।

छ.ग. में वर्षा की स्थिति (मि.मी. में)

1 जून से 28 सितम्बर 2025 तक

जिला	वास्तविक वर्षा	सामान्य वर्षा	सामान्य से अधिक या कम %
बालोद	1246.1	1020.3	22
बालोदा बाजार	904.	923.8	-2
बलरामपुर	1517.0	995.7	52
बस्तर	1513.8	1159.9	31
बेमेतरा	519.1	1041.6	-50
बीजापुर	1558.1	1360.2	15
बिलासपुर	1123.7	1941.1	8
दंतेवाड़ा	1548.0	1283.5	21
धमतरी	1055.6	1051.1	0
दुर्ग	941.9	976.5	-4
गरियाबंद	10.78.2	1048.8	3
गौरेला, पेंड्रा, मरवाही	1096.3	1096.5	0
जांजगीर	1354.5	1098.9	23
जशपुर	1038.8	1346.4	-23
कबीरधाम	801.4	862.4	-7
कांकेर	1251.5	1309.3	-4
खैरागढ़-छुईखदान गंडई	850.8	731.4	16
कोण्डागांव	1086.8	1166.4	-7
कोरबा	1123.8	1255.7	-11
कोरिया	1186.1	1100.7	8
महासमुंद	949.0	1057.2	-10
मनेन्द्रगढ़ भरतपुर	1075.0	1100.7	-2
मोहला, मानपुर चौकी	1427.1	1016.9	40
मुंगेली	1113.4	940.2	18
नारायणपुर	1391.0	1219.4	14
रायगढ़	1332.9	1183.1	13
रायपुर	1015.7	1018.8	0
राजनंदगांव	973.3	1022.1	-5
शक्ती	1238.9	1109.3	12
सारंगगढ़, बिलाईगढ़	1073.5	922.3	16
सुकमा	1204.2	1200.9	0
सूरजपुर	1139.6	1182.2	-4
सरगुजा	825.4	1155.4	-29

स्त्रोत: पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम केन्द्र, रायपुर

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, विज्ञापन, समाचार, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-
उत्तम कुमार देशमुख
(जिला प्रतिनिधि)
नावेल्टी न्यूज एजेंसी
ग्राम निकुंम, जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 8236059865

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, छोटे-बड़े विज्ञापन, कृषि समाचार, कृषि लेख, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-
बलभद्र शर्मा
डागा चौक वार्ड नं. 10, खरियार रोड, नुआपाड़ा (उड़ीसा)
पिन नं. 766104
मो. : 6371774361

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम ....
....
ग्राम .... पो. ....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....
वि.ख. .... तह. ....
जिला .... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य ....
शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....
ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....
ई-मेल ....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793,
Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

ट्रॉपिकल एग्रो का किसान सम्मेलन

रायगढ़। ट्रॉपिकल एग्रो इंडिया प्रा. लि. एवं स्थानीय शर्मा कृषि केंद्र तमनार के संयुक्त तत्वावधान में किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में तमनार क्षेत्र के विभिन्न ग्रामों से आए हुए 500 से अधिक किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

आधुनिक तकनीक की जानकारी

किसान सम्मेलन का उद्देश्य किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों, उन्नत कृषि पद्धतियों तथा नवीनतम कृषि उत्पादों की जानकारी उपलब्ध कराना था। सम्मेलन में विशेषज्ञों ने किसानों को सतत कृषि विकास, फसलों में नवाचार, गुणवत्तापूर्ण बीजों और कृषि संरक्षण उपायों के बारे में मार्गदर्शन दिया। किसानों ने भी अपने अनुभव साझा किए और आपसी संवाद के माध्यम से नई जानकारियाँ प्राप्त कीं।

विशेष अतिथियों की उपस्थिति

कार्यक्रम में ट्रॉपिकल एग्रो परिवार से DRM श्री सुशील कुमार प्रधान, श्री राजीव सिसोदिया, सागर गुप्ता प्रमुख रूप से उपस्थित थे। इसके साथ ही स्थानीय स्तर पर शर्मा कृषि केंद्र तमनार के प्रोप्रायटर पंकज शर्मा और मनोज शर्मा ने सम्मेलन को सहयोग प्रदान किया और किसानों के बीच लगातार संवाद बनाए रखा।

सम्मेलन के सफल आयोजन पर आयोजकों ने आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह केवल एक कार्यक्रम भर नहीं रहा, बल्कि एक ऐसा ज्ञान और संवाद का मंच साबित हुआ, जिसने कृषि क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव की दिशा में एक कदम बढ़ाया है।

इफको का पशु स्वास्थ्य जाँच शिविर

राजनांदगांव। इफको ने ग्राम सिंहोला, जिला राजनांदगांव में पशुपालक किसानों के लिए पशु स्वास्थ्य जाँच एवं नि:शुल्क उपचार शिविर का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों कोपशु चिकित्सा सेवाएँ, दवाओं का वितरण एवं वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध कराना था। शिविर को जिला पशु चिकित्सा विभाग का तकनीकी सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविर का शुभारंभ डॉ. प्रतिभा भोसले, उप संचालक, पशु चिकित्सा सेवाएँ द्वारा किया गया। उन्होंने किसानों को पशुओं में होने वाली सामान्य बीमारियों, उनके रोकथाम के उपाय एवं नियमित टीकाकरण के महत्व पर जानकारी दी। इसके पश्चात्डॉ. रजनीश अग्रवाल, अतिरिक्त संचालक, पशु चिकित्सा सेवाएँ ने पशुपालकों को केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी दी। डॉ. प्रियंका साव एवं डॉ. सौरभ साहू, पशु चिकित्सा सहायक शल्यज्ञने टीकाकरण की प्रक्रिया और समयबद्धता पर विस्तृत मार्गदर्शन दिया।

कार्यक्रम का संचालन इफको राजनंदगांव क्षेत्रीय अधिकारी दानिश अहमद सिद्दिकी द्वारा किया गया । इफको राजनंदगांव क्षेत्रीय अधिकारी ने किसानों को बताया कियैनो यूरिया का उपयोग चारे की फसलों में करने से पशुओं को पोषक चारा उपलब्ध कराया जा सकता है। साथ ही बताया कि नैनो उर्वरकों से जुड़ी दुर्घटना बीमा योजनाकिसानों को अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करती है।

महिंद्रा का सबसे एडवांस्ड ट्रैक्टर YUVO TECH+ 475 DI लॉन्च

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत के अग्रणी ट्रैक्टर निर्माता महिंद्रा एंड महिंद्रा ने किसानों के लिए अपनी YUVO सीरीज का विस्तार करते हुए नया ट्रैक्टर YUVO TECH+ 475 DI लॉन्च कर दिया है। यह ट्रैक्टर 42 हॉर्सपावर की श्रेणी में आता है और इसे खासतौर पर किसानों की आधुनिक जरूरतों और बदलती कृषि तकनीकों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। ट्रैक्टर में महिंद्रा का नया, दमदार और ईंधन-कुशल mBULL इंजन दिया गया है, जो कठिन परिस्थितियों और भारी उपकरणों के साथ भी उत्कृष्ट प्रदर्शन देता है। इस ट्रैक्टर की एक और बड़ी खासियत है कि कंपनी इस पर 6 साल की इंडस्ट्री-बेस्ट वारंटी दे रही है, जो भारतीय कृषि यंत्र बाजार में भरोसे का नया मानक स्थापित करती है। इस ट्रैक्टर का लॉन्च मुख्य रूप से उन किसानों को ध्यान में रखकर किया गया है, जो उच्च उत्पादकता, कम ईंधन खपत, और बेहतर आराम की तलाश में हैं।

दमदार प्रदर्शन वाला mBULL इंजन- Mahindra YUVO TECH+ 475 DI में दिया गया है नया 2980 सीसी का mBULL 3-सिलेंडर इंजन, जो अधिकतम 191 Nm टॉर्क और 28% बैकअप टॉर्क देता है। यह इंजन हाई-क्यूबिक कैपेसिटी वाला है, जो खेतों में गहरे और भारी उपकरणों जैसे रोटावेटर, कल्टीवेटर, बेलर, ट्रॉली आदि के साथ काम करने में बेहतर तालमेल और ताकत प्रदान करता है।

इस इंजन की खास बात यह है कि इसमें वॉटर सेपरेटर तकनीक दी गई है, जो डीज़ल में मौजूद पानी और अशुद्धियों को अलग करता है। इससे इंजन की परफॉर्मेंस बेहतर होती है और इसकी उम्र लंबी होती है।

मल्टी-स्पीड PTO और ईंधन बचत- महिंद्रा YUVO TECH+ 475 DI में मल्टी-स्पीड PTO (MSPTO) दी गई है, जिससे किसान अपनी जरूरत के अनुसार PTO की स्पीड सेट कर सकते हैं। इससे विभिन्न कृषि उपकरणों को चलाने में लचीलापन मिलता है और ईंधन की भी बचत होती है। ट्रैक्टर में डुअल क्लच, 12 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर दिए गए हैं, जो कठिन ज़मीन और भारी कार्यों में ट्रैक्टर को नियंत्रित और प्रभावी तरीके से चलाने में मदद करते हैं।

6 साल की भरोसेमंद वारंटी-Mahindra YUVO TECH+ 475 DI ट्रैक्टर पर कंपनी दे रही है 6 साल या 6000 घंटे की वारंटी (जो भी पहले हो)। यह इंडस्ट्री में सबसे लंबी वारंटी मानी जा रही है, जिससे किसानों को लंबे समय तक मेंटेनेंस और सर्विस का भरोसा मिलता है।

फिलहाल इन राज्यों में उपलब्ध- नई तकनीक और दमदार इंजन से लैस यह ट्रैक्टर आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटक और महाराष्ट्र के चुनिंदा महिंद्रा डीलरशिप्स पर उपलब्ध है।

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली
जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला -
सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के
अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिचाई व्यवस्था
के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।
(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेव्हर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज

जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास २
साईज - १६, २० मिमी

जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
१३, १५ मील (०.33, ०.38 मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी

नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटींग में उपलब्ध

जैन® ड्रिप
प्रति बूँद, फसल भरपूर!®

जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.
छोटे छोटे कदम, आसमान छूने का दम!®

दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; **वेबसाईट:** www.jains.com

ड्रिपलाईन व फिटींग्ज | ड्रिपर्स | रेनपोर्ट स्प्रिंकलर | स्प्रे हेड व जेटस् | वॉल्व | फिल्टर्स | फिल्ट्रेशन संसाधन | फर्टिगेशन संसाधन | पीव्हीसी पाईप व फिटींग्ज | एचडीपीई पाईप्स व फिटींग्ज | क्विक कनेक्ट पाइप | ऑटोमेशन व कन्ट्रोलर्स

सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!

कृषि-रसायन क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का आह्वान : श्री गडकरी

CCFI की 62वीं वार्षिक आमसभा में संगठन की मजबूती और उद्योग की वैश्विक स्थिति पर जोर

नई दिल्ली (कृषक जगत)। क्रॉप केयर फेडरेशन ऑफ इंडिया (CCFI) की 62वीं वार्षिक आमसभा (AGM) नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। इसमें नीति-निर्माताओं, उद्योग नेताओं और किसान संगठनों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने कहा कि कृषि भारत की आत्मनिर्भरता का आधार बनना चाहिए। उन्होंने कृषि का GDP योगदान 18 प्रतिशत से बढ़ाकर 26 प्रतिशत करने की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री गडकरी ने कहा कि भारत का कृषि-रसायन उद्योग 70,000 करोड़ रुपये का है, जिसमें से 51 प्रतिशत निर्यात होता है। यह गर्व की बात है लेकिन कच्चे माल पर निर्भरता घटाना ज़रूरी है। उन्होंने गन्ना व मक्का से बढ़ते एथनॉल उत्पादन और तेलहन अनुसंधान को किसानों की आय बढ़ाने का प्रमुख साधन बताया।

संगठन कार्यकारिणी

सभा में चुनाव भी सम्पन्न हुए। श्री दीपक शाह (SML) को पुन: चेयरमैन चुना गया, जबकि श्री राजेश अग्रवाल (IIL) और श्री ओमबीर सिंह त्यागी (UPL) उपाध्यक्ष बने। यह पुनर्नियुक्तियाँ संगठन की स्थिरता और मज़बूत नेतृत्व का संकेत हैं। श्री शाह चेयरमैन CCFI और एसएमएल लि., ने कहा, 'भारत का कृषि-रसायन उद्योग हर साल 40,000 करोड़ रुपये से अधिक का निर्यात करता है और घरेलू बाज़ार भी उतना ही बड़ा है। हम 600 अरब डॉलर के खाद्य उत्पादन में योगदान देते हैं। हमारे उत्पाद दुनिया में सर्वोत्तम माने जाते हैं और हमारे सदस्य 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' के विज़न को आगे बढ़ा रहे हैं।'

नवाचार और चुनौतियाँ

CCFI के चेयरमैन एमेरिटस श्री आर.डी. श्रॉफ ने कहा कि भारतीय निर्माता दुनिया में सबसे कम लागत पर श्रेष्ठ नवाचार कर रहे हैं और किसानों को सस्ते दाम पर समाधान उपलब्ध करा रहे हैं। **श्री राजेश अग्रवाल, उपाध्यक्ष CCFI और एमडी, इनसेक्टिसाइड्स इंडिया लि.,** ने भारत को 'अवसरों की भूमि' बताते हुए कहा, '140 करोड़ की आबादी में से 70 करोड़ युवा हैं। भारत की प्रगति को कोई नहीं रोक सकता। अनुसंधान और विनिर्माण में भारी निवेश ने हमें वैश्विक स्तर पर चैंपियन सेक्टर बना दिया है। जो हम उत्पादन करते हैं, वह न केवल घरेलू ज़रूरतें पूरी करता है बल्कि निर्यात की भी संभावना है।'

कृषि आयुक्त डॉ. पी.के. सिंह ने 2047 के लिए तैयारी की ज़रूरत बताते हुए फसल विविधीकरण और पोषण सुरक्षा पर ज़ोर दिया। उद्योग की ओर से **सुश्री कोमल शाह भुखनवाला** ने मिट्टी की सेहत, नाइट्रेट प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन को सबसे बड़ी चुनौतियाँ बताते हुए कहा कि भविष्य जैविक उत्पादों और हरित रसायनों का है। भारतीय किसान समाज के अध्यक्ष **श्री कृष्ण बीर चौधरी** ने कहा कि आज भारतीय किसान को किफायती और गुणवत्तापूर्ण कृषि-रसायन उपलब्ध हैं और यही आत्मनिर्भरता की मज़बूत नींव है। इस अवसर पर एमको के चैयरमेन एवं पीएमएफएआई के प्रेसीडेंट श्री प्रदीप दवे विशेष रूप से उपस्थित थे।

चम्बल फर्टिलाइज़र्स की विक्रेता संगोष्ठी

रायगढ़। जिले के खरसिया में चम्बल फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स लि द्वारा गत दिनों उप विक्रेता गोष्ठी आयोजित की गई। इसमें विशेष अतिथि श्री एस.के. दुबे सीनियर रीजनल मैनेजर थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में सहायक प्रबंधक श्री स्नेहिल चौधरी ने विशेष अतिथि, डीलर्स और रिटेलर्स का स्वागत करते हुए कृषि के भौगोलिक पहलुओं के बारे में बताया। साथ ही कंपनी के सीनियर रीजनल मैनेजर श्री दुबे ने कंपनी की विरासत, संगठन के सिद्धांतों और मूल्यों की जानकारी दी। उन्होंने सीपीसी और एस.एन. बिजनेस के स्कोप के बारे में बताया तथा व्यापारियों की मानसिकता को सिर्फ बल्क फर्टिलाइजर से हटाकर सम्पूर्ण एग्री इनपुट बिजनेस की ओर शिफ्ट करने पर जोर दिया।

पीओएस सेल्स की महत्ता पर विशेष जानकारी दी। कंपनी के प्रोडक्ट पोर्टफोलियो पर चर्चा की और भरोसा दिलाया कि जो भी जरूरत होगी, कंपनी पूरी करेगी।

वर्तमान में फर्टिलाइजर के परिदृश्य की जानकारी दी। इस कार्यक्रम में कंपनी के विक्रेता ज़िन्दल सेल्स के आकाश ज़िन्दल तथा सारंगगढ के नन्द किशोर अग्रवाल आदि मौजूद रहे।

ऑफ़र के लिए मिस्ड कॉल दें
08037749101

यह योजना छत्तीसगढ़ महिंद्रा डीलरशिप द्वारा संचालित है और महिंद्रा इस योजना संबंधित किसी भी मुद्दे या क्षति के लिए जिम्मेदार नहीं है।
दिखाए गये उपहार केवल प्रतिनिधित्व के लिए हैं। वास्तविक इनाम/उपहार अलग हो सकते हैं। नियम व शर्तें लागू। अधिक जानकारी के लिए, अपने नज़दीकी महिंद्रा अधिकृत डीलर से संपर्क करें।
*RTO और इंश्योरेंस शामिल नहीं हैं। दिखाई गई कीमतों में जीएसटी के फायदे शामिल हैं।
**क़ीमत चुने गए मॉडल और वेरिएंट के अनुसार बदल सकती है। सभी महिंद्रा ट्रैक्टर की रेंज (15 HP-75 HP) पर उपलब्ध। नियम व शर्तें लागू